मुहूर्त्त बोध

विषय सूची

अध्याय–1

पंचांग

पंचांग में पाँच अंग होते हैं– तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण। इन्हीं के आधार पर शुभ समय निश्चित किया जाता है। इन पाँचों का परिचय और इन्हीं पाँचों के आपस में मिलने से अनेक शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले समय प्राप्त होते हैं, उनका ज्ञान रखना परम आवश्यक है। समय के शुभाशुभ ज्ञान के द्वारा मुहूर्त्त निकाला जाता है।

मुहूर्त्त दो प्रकार के होते हैंः–

एक सामान्य, दूसरा विशिष्ट।

सामान्य मुहूर्त्त

जिस मुहूर्त्त में तिथि, वार, नक्षत्रादि का विचार न किया जाए उसे सामान्य मुहूर्त्त कहते हैं। उदाहरण चौघड़िया, अभिजित् आदि।

विशिष्ट मुहूर्त्त

जिस मुहूर्त्त में जातक के राशि नक्षत्रानुसार तिथि, वार, नक्षत्रादि का विचार किया जाए, उसे विशिष्ट मुहूर्त्त कहते हैं। उदाहरण विवाह, सेवाकरण, वाहन क्रय आदि।

तिथि

चंद्र की एक कला को तिथि कहते हैं। भचक्र में सूर्य और चंद्र की आपसी कोणीय दूरी 0^0 होती है, तो प्रथम तिथि का आरंभ होता है और जब सूर्य चंद्र भचक्र में परिभ्रमण करते आपस में 12^0 के कोणीय अंतर में रहते हैं, तो प्रथम तिथि का अंत और द्वितीय तिथि का आरंभ होता है। इस तरह 0^0–12^0 तक प्रथम, 12^0–24^0 तक द्वितीया 24^0–36^0 तक तृतीया ... 168^0–180^0 तक पूर्णिमा, पूर्णिमा के बाद 180^0–192^0 तक फिर प्रथम तिथि और क्रमशः 348^0–360^0 तक अमावस्या होती है।

इस तरह से एक माह में 30 तिथियां होती हैं और दो पक्ष 1 अमावस्या के अंत से पूर्णिमा के अंत तक शुक्ल पक्ष और पूर्णिमा के अंत से अमावस्या के अंत तक कृष्ण पक्ष कहलाता है।

तिथि जानने का सूत्र इस प्रकार है :

$$\frac{\text{चंद्र के भोगांश} - \text{सूर्य के भोगांश}}{12^0}$$

12^0 पर भाग देने पर यदि भाग फल 15 से कम आता है, तो कृष्ण पक्ष माना जाता है। भाग फल 15 से अधिक आने पर भाग फल को 15 से घटा दें और एक जोड़ दें, तो कृष्ण पक्ष की तिथियाँ ज्ञात होंगी।

यदि भाग फल 15 से कम है, तो भागफल में एक जोड़ने पर तिथियां ज्ञात होंगी।

तिथियों के नाम

- प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी , दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा एवं अमावस्या।

तिथियों के प्रकार

नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता , पूर्णा एवं पक्षरन्ध्र संज्ञक तिथियाँ होती हैं।

- **नन्दा**– प्रतिपदा, षष्ठी एवं एकादशी (1, 6,11) तिथियाँ नन्दा हैं।
- **भद्रा**– द्वितीया, सप्तमी, एवं द्वादशी (2, 7, 12) तिथियाँ भद्रा हैं।
- **जया**– तृतीया, अष्टमी एवं त्रयोदशी (3, 8, 13) तिथियाँ जया हैं।
- **रिक्ता** – चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी (4, 9, 14) तिथियाँ रिक्ता हैं।
- **पूर्णा**– पंचमी, दशमी एवं पूर्णिमा (5, 10, 15) तिथियाँ पूर्णा हैं।
- **पक्षरन्ध्र**– चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी एवं चतुर्दशी (4, 6, 8, 9, 12, 14) तिथियाँ पक्षरन्ध्र हैं।

शुक्ल पक्ष की प्रथम पांच तिथियों को अशुभ माना जाता है, क्योंकि चंद्र निर्बल रहता है। आगामी पांच तिथियों को मध्यम फलदायी और अंतिम पांच को विशेष लाभकारी माना जाता है। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष की प्रथम पांच विशेष शुभ, आगामी पांच मध्य लाभकारी और अंतिम पांच अशुभ मानी जाती हैं।

रिक्ता तिथियाँ प्रायः अशुभ मानी जाती हैं।

क्षय तिथियां : जो तिथि सूर्य उदय के उपरांत शुरू हो और अगले दिन के सूर्य उदय से पहले समाप्त हो जाय, उसे क्षय तिथि कहते हैं। क्षय तिथि भी शुभ कार्य के लिए अशुभ मानी जाती है। इसलिए क्षय तिथि में कोठे का शुभ मुहूर्त नहीं निकाला जाता।

वृद्धि तिथि : जो तिथि सूर्य उदय होने से पहले शुरू हो और अगले दिन सूर्य उदय होने के उपरांत समाप्त हो उसे वृद्धि तिथि माना जाता है। वृद्धि तिथि में भी शुभ मुहूर्त नहीं होता है।

पड़वा तिथियां : यदि कृष्ण पक्ष की अष्टमी, चतुर्थी, अमावस्या और पूर्णिमा तिथियां संक्रांति के दिन आयें तो उन्हें पड़वा तिथियां कहते हैं। पड़वा तिथियों में भी शुभ मुहूर्त नहीं होता है।

गलगरहा तिथियाँ : कृष्ण पक्ष की चतुर्थी और दोनों पक्षों की सप्तमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और प्रथम तिथियों को गलगरहा तिथियाँ माना जाता है। इन तिथियों में उपनयन और विद्या के लिए शुभ मुहूर्त नहीं निकाले जाते।

दग्ध संज्ञक तिथियाँ

- रविवार को द्वादशी तिथि दग्ध संज्ञक है।
- सोमवार को एकादशी तिथि दग्ध संज्ञक है।
- मंगलवार को पंचमी तिथि दग्ध संज्ञक है।
- बुधवार को तृतीया तिथि दग्ध संज्ञक है।
- गुरुवार को षष्ठी तिथि दग्ध संज्ञक है।
- शुक्रवार को अष्टमी तिथि दग्ध संज्ञक है।
- शनिवार को नवमी तिथि दग्ध संज्ञक है।

इन तिथियों में कार्य करने से विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

विष संज्ञक तिथियाँ

- रविवार को चतुर्थी तिथि विष संज्ञक है।
- सोमवार को षष्ठी तिथि विष संज्ञक है।
- मंगलवार को सप्तमी तिथि विष संज्ञक है।
- बुधवार को द्वितीया तिथि विष संज्ञक है।
- गुरुवार को अष्टमी तिथि विष संज्ञक है।
- शुक्रवार को नवमी तिथि विष संज्ञक है।
- शनिवार को सप्तमी तिथि विष संज्ञक है।

इन तिथियों में कार्य करने से अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

हुताशन संज्ञक तिथियाँ

- रविवार को द्वादशी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- सोमवार को षष्ठी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- मंगलवार को सप्तमी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- बुधवार को अष्टमी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- गुरुवार को नवमी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- शुक्रवार को दशमी तिथि हुताशन संज्ञक है।
- शनिवार को एकादशी तिथि हुताशन संज्ञक है।

इन तिथियों में कार्य करने से विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

दग्ध–विष–हुताशनयोगसंज्ञाबोधक चक्र

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
दग्धा संज्ञक	12	11	5	3	6	8	9
विष संज्ञक	4	6	7	2	8	9	7
हुताशन संज्ञक	12	6	7	8	9	10	11

नक्षत्र

भचक्र को जब 27 भागों में बांटा गया तो एक भाग को नक्षत्र कहा गया। इस तरह एक नक्षत्र $13^0 20'$ या $800'$ मिनट का हुआ। चंद्र भचक्र में जिस नक्षत्र में रहता है उसे ही मुहूर्त में विशेष माना जाता है। नक्षत्र ज्ञात करने के लिए चंद्र के भोगांश को $13^0 20'$ से भाग देने पर जो मानफल उपलब्ध होता है उसमें 1 जोड़ देने पर नक्षत्र की संख्या मालूम होती है। उसी संख्या का नक्षत्र होता है।

नक्षत्र = चंद्र भोगांश $\div 13^0 20'$

नक्षत्रों के नाम व संख्या

1.अश्विनी, 2.भरणी, 3.कृत्तिका, 4.रोहिणी, 5.मृगशिरा, 6.आर्द्रा, 7.पुनर्वसु, 8.पुष्य, 9.आश्लेषा, 10.मघा, 11. पूर्वफाल्गुनी, 12.उत्तरफाल्गुनी, 13.हस्त, 14.चित्रा, 15.स्वाती, 16.विशाखा, 17.अनुराधा, 18.ज्येष्ठा, 19.मूल, 20.पूर्वाषाढ़, 21.उत्तराषाढ़, 22.श्रवण, 23.धनिष्ठा, 24.शतभिषा, 25.पूर्वभाद्र, 26.उत्तरभाद्र, 27.रेवती।

अभिजित नक्षत्र

मुहूर्त में अभिजित नक्षत्र का भी महत्व है, अर्थात् 28 नक्षत्र को मान्यता है। उतराषाढ़ नक्षत्र के अंतिम चरण और 4 घटी श्रावण नक्षत्र मिला कर अभिजित नक्षत्र माना गया है। अर्थात् मकर राशि की $6^0 40'$ से लेकर 10°53'20" तक अभिजित नक्षत्र का है।

पंचक विचार

जब चन्द्र कुम्भ और मीन राशियों में हो, तो पंचक होता है, अर्थात् जब धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र पर चन्द्र होता है तो पंचक कहलाता है।

इस पंचक में काम करने से पाँच गुना हानि होती है। घर छाना, प्रेतदाह; घास, लकड़ी आदि एकत्र करना, खाट बुनना, चूल्हा बनाना आदि पंचक में निषेध माने गये हैं। आवश्यक कार्य प्रेतदाह आदि करना होता है, तो उसका फल कम करने का पृथक विधान है। दक्षिण यात्रा भी पंचक में वर्जित है।

मूल संज्ञक

ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मूल, मघा और अश्विनी नक्षत्र मूलसंज्ञक हैं। इनमें यदि बालक उत्पन्न होता है, तो 27 दिन के पश्चात् जब वही नक्षत्र आ जाता है, तब शान्ति करायी जाती है। इन नक्षत्रों में ज्येष्ठा और मूल गण्डान्त मूलसंज्ञक तथा आश्लेषा सर्प मूलसंज्ञक है।

तारा

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र की संख्या तक गिनने पर संख्या 1 पर जन्म तारा, 2 पर सम्पत् आदि होती है। यदि संख्या 9 से अधिक हो तो 9 का भाग देने से 1 शेष में जन्म, 2 में सम्पत्, 3 में विपत् आदि होती हैं।

ताराओं के नाम :

1. जन्म 2. सम्पत् 3. विपत् 4. क्षेम. 5. प्रत्यरि 6. साधक 7. वध 8. मित्र 9. अतिमित्र।

योग

सूर्य और चंद्र के आपसी संबंध से योग बनता है। सूर्य स्पष्ट और चंद्र स्पष्ट के योग को $13^0 20'$ पर भाग देने से जो भागफल आता है उस में एक जोड़ देने से योग की संख्या आती है।

योग ज्ञात करने का सूत्र :–

$$\frac{\text{सूर्य स्पष्ट} + \text{चंद्र स्पष्ट}}{13^0 20' \; (800')}$$

योगों के नाम

इस प्रकार 27 योग बनते हैं जो क्रमशः निम्नलिखित हैं: –

1. विष्कम्भ, 2. प्रीति, 3. आयुष्मान्, 4. सौभाग्य, 5. शोभन. 6. अतिगण्ड 7. सुकर्मा. 8. धृति. 9. शूल 10. गण्ड 11. वृद्धि. 12. ध्रुव. 13. व्याघात, 14. हर्षण. 15. वज्र, 16. सिद्धि, 17. व्यतिपात, 18. वरीयान् 19. परिघ, 20. शिव, 21. सिद्ध. 22. साध्य, 23. शुभ, 24. शुक्ल, 25. ब्रह्म 26. ऐन्द्र 27. वैधृति।

विष्कम्भादि 27 योगों के क्रमबद्ध नाम, उनके स्वामी तथा उनकी शुभाशुभता प्रस्तुत चक्र में द्रष्टव्य हैं–

योग चक्र

क्र.सं.	योग का नाम	स्वामी	फल
1	विष्कुंभ	यम	अशुभ
2	प्रीति	विष्णु	शुभ
3	आयुष्मान्	चन्द्र	शुभ
4	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ
5	शोभन	बृहस्पति	शुभ
6	अतिगण्ड	चन्द्र	अशुभ
7	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ
8	धृति	जल	शुभ
9	शूल	सर्प	अशुभ
10	गण्ड	अग्नि	अशुभ
11	वृद्धि	सूर्य	शुभ
12	ध्रुव	भूमि	शुभ
13	व्याघात	वायु	अशुभ
14	हर्षण	भग	शुभ
15	वज्र	वरुण	अशुभ
16	सिद्धि	गणेश	शुभ
17	व्यतिपात	रुद्र	अशुभ
18	वरीयान्	कुबेर	शुभ
19	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ
20	शिव	मित्र	शुभ
21	सिद्ध	कार्तिकेय	शुभ
22	साध्य	सावित्री	शुभ
23	शुभ	लक्ष्मी	शुभ
24	शुक्ल	पार्वती	शुभ
25	ब्रह्म	अश्विनी कुमार	शुभ
26	ऐन्द्र	पितर	अशुभ
27	वैधृति	दिति	अशुभ

निन्द्य योग

व्यतिपात योग– यह एक महान् उपद्रवकारी योग है। विष्कम्भादि योगों में तो यह 17वां योग है ही, जो कि क्रम से आता रहता है। परन्तु यह तत्कालीन योग भी है, जो अमावस्या को रविवार या श्रवण, धनिष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा अथवा मृगशिरा नक्षत्र के सान्निध्य से उत्पन्न होता है। इस अमा जनित व्यतिपात में गंगा स्नान का बड़ा महत्त्व है। समस्त मांगलिक कार्यों एवं यात्रादि में इसका परित्याग हितकर है।

वैधृति योग– यह भी व्यतिपात के समान है। अतः इसे भी शुभजनक कृत्यों में पूर्णतया विवर्ज्य समझना चाहिए।

शेष जघन्य योगों में परिघ का पूर्वार्द्ध, विष्कम्भ और वज्र की आदिम 3घटियाँ, व्याघात की प्रारम्भिक 9 शूल की पहली 5 घटी तथा गंड–अतिगंड की शुरुआत की 6–6 घटियाँ विशेषतः त्याज्य हैं।

करण

तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं, अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं। कुल 11 करण होते हैं।

करणों के नाम

1. बव, 2. बालव, 3. कौलव, 4. तैतिल, 5. गर, 6. वणिज, 7. विष्टि, 8. शकुनि, 9. चतुष्पद, 10. नाग, 11. किंस्तुघ्न।

उपर्युक्त करणों में पहले से 7 करण तक चर संज्ञक और आठ से अन्तिम 4 करण स्थिर संज्ञक हैं।

करणों के स्वामी

क्र.सं.	करण	स्वामी
1	बव	इन्द्र
2	बालव	ब्रह्मा
3	कौलव	मित्र
4	तैतिल	विश्वकर्मा
5	गर	भूमि
6	वणिज	लक्ष्मी
7	विष्टि	यम
8	शकुनि	कलि
9	चतुष्पद	रुद्र
10	नाग	सर्प
11	किंस्तुघ्न	मरुत्

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तिथि तक के करण निम्नलिखित हैं।

क्र.सं.	तिथि	करण	
		पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
1	प्रतिपदा	किंस्तुघ्न	बव
2	द्वितीया	बालव	कौलव
3	तृतीया	तैतिल	गर
4	चतुर्थी	वणिज	विष्टि
5	पंचमी	बव	बालव
6	षष्ठी	कौलव	तैतिल
7	सप्तमी	गर	वणिज
8	अष्टमी	विष्टि	बव
9	नवमी	बालव	कौलव
10	दशमी	तैतिल	गर
11	एकादशी	वणिज	विष्टि
12	द्वादशी	बव	बालव
13	त्रयोदशी	कौलव	तैतिल
14	चतुर्दशी	गर	वणिज
15	पूर्णिमा	विष्टि	बव

कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तिथि तक के करण निम्नलिखित हैं।

क्र.सं.	तिथि	करण	
		पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
1	प्रतिपदा	बालव	कौलव
2	द्वितीया	तैतिल	गर
3	तृतीया	वणिज	विष्टि
4	चतुर्थी	बव	बालव
5	पंचमी	कौलव	तैतिल
6	षष्ठी	गर	वणिज
7	सप्तमी	विष्टि	बव
8	अष्टमी	बालव	कौलव
9	नवमी	तैतिल	गर
10	दशमी	वणिज	विष्टि
11	एकादशी	बव	बालव
12	द्वादशी	कौलव	तैतिल
13	त्रयोदशी	गर	वणिज
14	चतुर्दशी	विष्टि	शकुनि
15	अमावस्या	चतुष्पद	नाग

करणों की शुभाशुभता

बव आदि प्रथम करण सप्तक चर एवं शेष शकुनि आदि चतुष्टय स्थिर संज्ञक हैं। बव आदि छः करणों में मांगलिक कर्म शुभ होता है। भद्रा सर्वथा त्याज्य तथा अन्तिम चार करणों में पितृ कर्म प्रशस्त है।

मतान्तर से **'बव'** करण में बलवीर्य वर्धक–पौष्टिक कर्म, **'बालव'** में ब्राह्मणों के षट्कर्म (पढ़ना,पढ़ाना,यज्ञ करना, यज्ञ कराना तथा दान का आदान–प्रदान)

'कौलव' में स्त्री कर्म एवं मैत्री करण, **'तैतिल'** में सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म, **'गर'** में बीजारोपण और हल–प्रवहण, **'वणिज'** में व्यापार कर्म, **'भद्रा'(विष्टि)'** में अग्नि लगाना, विष देना, युद्ध आरम्भ, दण्ड देना तथा समस्त दुष्ट कर्म, **शकुनि** में औषधि निर्माण व सेवन, मंत्र साधन तथा पौष्टिक कर्म, **'चतुष्पद'** में राज्यकर्म व गो ब्राह्मण विषयक कर्म, **'नाग'** में सौभाग्यता व क्रूर कार्य तथा **'किंस्तुघ्न'** करण में मंगल जनक कर्म करना शास्त्रसम्मत है।

भद्रा वास

जिस स्थिति में विष्टि करण रहता है, वह भद्रा कहलाता है। भद्रा काल में शुभ कार्य वर्जित है।

भद्रा के समय यदि चंद्र 4, 5, 11, 12 राशियों में रहता है, तो भद्रा मृत्यु लोक में मानी जाती है। इस तरह यदि चंद्र 1, 2, 3, 8 राशि में हो, तो भद्रा स्वर्ग लोक और 6, 7, 9, 10 राशि में भद्रा पाताल लोक में मानी जाती है। भद्रा काल को प्रायः शुभ नहीं माना जाता। यदि भद्रा मृत्यु लोक की हो, तो विशेष अशुभ माना जाता है। कोई भी शुभ कार्य भद्रा में वंचित है।

भद्रा मुख और पूछ : भद्रा मुख और पूछ ज्ञात करने के लिए विष्टि करण को चार भागों में बांटा जाता है : पहला भाग, दूसरा, तीसरा और चौथा भाग।

भद्रा मुख :

1. शुक्ल पक्ष चतुर्थी और कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तिथियों को विष्टि करण के प्रथम भाग की प्रथम 5 घटियों अर्थात् 2 घंटे तक भद्रा मुख में रहती है।
2. शुक्ल पक्ष अष्टमी और कृष्ण पक्ष दशमी तिथियों को विष्टि करण के द्वितीय भाग की प्रथम 5 घटियों तक भद्रा मुख में रहती है।
3. शुक्ल पक्ष एकादशी और कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथियों को विष्टिकरण के तृतीय भाग की प्रथम 5 घटियों तक भद्रा मुख में रहती है।
4. शुक्ल पक्ष पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तिथियों को विष्टि करण के चतुर्थ भाग की प्रथम 5 घटियों तक भद्रा मुख में रहती है।

भद्रा पूछ :

1. शुक्ल पक्ष चतुर्थी और कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तिथियों को विष्टि करण के चतुर्थ भाग की अंतिम 3 घटियों में भद्रा पूछ में रहती है। (अर्थात 1 घंटा 12 मिनट)
2. शुक्ल पक्ष अष्टमी और कृष्ण पक्ष दशमी तिथियों को विष्टिकरण के प्रथम भाग की अंतिम 3 घटियों में भद्रा पूछ में रहती है।

3. शुक्ल पक्ष एकादशी और कृष्ण पक्ष सप्तमी तिथियों को विष्टि करण के द्वितीय भाग की अंतिम 3 घटियों में भद्रा पूछ में रहती है।
4. शुक्ल पक्ष पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तिथि को विष्टिकरण के तृतीय भाग की अंतिम 3 घटी में भद्रा पूछ में रहती है।

तिथि	शुक्लपक्ष –4 कृष्ण पक्ष–14	शुक्ल–8 कृष्ण –10	शुक्ल–11 कृष्ण –7	शुक्ल–15 कृष्ण –3
भद्रा मुख	विष्टिकरण के प्रथम भाग की प्रथम 5 घटियां	विष्टिकरण के द्वितीय भाग की प्रथम 5 घटियां	विष्टिकरण के तृतीय भाग की प्रथम 5 घटियां	विष्टिकरण के चतुर्थ भाग की प्रथम 5 घटियां
भद्रा पूँछ	विष्टिकरण के चतुर्थ भाग की अंतिम 3 घटियां	विष्टिकरण के प्रथम भाग की अंतिम 3 घटियां	विष्टिकरण के द्वितीय भाग की अंतिम 3 घटियां	विष्टिकरण के तृतीय भाग की अंतिम 3 घटियां

मास

सौर मास

सूर्य के क्रमशः बारह राशियों में रहने से सौर मास बनते हैं। जब सूर्य मेष में प्रवेश करता है, तो वैशाख सौर मास का आरंभ होता है। इसी तरह क्रमशः वृष में प्रवेश से ज्येष्ठ मास, मीन राशि में चैत्र मास का आरंभ होकर बारह सौर मास बनते हैं।

अधिक मास

जिस सौर मास में 2 अमावस्या होती है अर्थात अमावस्या 2 बार एक ही राशि में हो जाती है तब एक मास की अधिकता हो जाती है। इसे अधिक मास कहते हैं।

क्षय मास

जिस सौर मास में एक भी राशि में अमावस्या होती ही नहीं उसे क्षय मास कहते हैं।

अयन

क्रान्तिवृत्त के प्रथमांश का विभाजन उत्तर व दक्षिण गोल के मध्यवर्ती ध्रुवों के द्वारा माना गया है। यही विभाजन उत्तरायण और दक्षिणायण कहलाता है।

उत्तरायण

उत्तरायण को सौम्यायन भी कहा जाता है। मकर के सूर्य से लेकर मिथुन के सूर्य तक उत्तरायण कहलाता है। साधारणतया लौकिक मतानुसार यह माघ से आषाढ़ पर्यन्त माना जाता है।
सौम्यायन सूर्य की कलावधि को देवताओं का दिन माना गया है एवं इस समय में सूर्य देवताओं का अधिपति होता है। शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म ये तीन ऋतुएँ उत्तरायण सूर्य का संगठन करती हैं।

दक्षिणायण

कर्क के सूर्य से धनु राशिस्थ सूर्य तक का मध्यान्तर दक्षिणायण संज्ञक है। दक्षिणायण में वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतु त्रय की संगति होती है। यह समय देवताओं की रात्रि माना गया है।

सामान्यतया सभी कार्यों में लग्न शुद्धि

लग्न का विचार छोड़कर यदि कुछ काम किया जाय, तो वह सब निष्फल होता है। शास्त्रों के अनुसार चन्द्र बल की अपेक्षा लग्न बल ही प्रधान है।

- अपनी जन्म राशि से 8वीं एवं 12वीं राशि का परित्याग (छोड़) कर अन्य राशि लग्न में हो।
- लग्न से 8वें, 12वें स्थान में कोई ग्रह न हो।
- चन्द्रमा लग्न से 3, 6, 10 या 11 वें स्थान में हो।
- शेष शुभ ग्रह केन्द्र, त्रिकोण (1, 4, 7, 10, 5, 9) में और पाप ग्रह त्रिषडाय (3, 6, 11) में हों।

विशेष

यदि उपर्युक्त प्रकार से शोधित लग्न की राशि अपनी जन्म'राशि से 3, 6, 10 या 11वें हो, तो वह उत्तम लग्न का मुहूर्त होता है एवं लग्न जितने अधिक शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, उतना ही अधिक बली एवं फलप्रद होता है।

चन्द्रबल

अपनी जन्म राशि से 1, 3, 6, 7, 10, 11वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्ल पक्ष में 2, 5, 9 वीं राशि का चन्द्र भी शुभ होता है।

ताराबल

जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को 9 से भाग दें, शेष 1, 2, 4, 6, 8, 0 रहे तो तारा–बल प्राप्त होता है, 3, 5, 7 शेष रहे तो तारा–बल नहीं मिलता।

शुक्लपक्ष में चन्द्रबल एवं कृष्ण पक्ष में तारा बल लेना चाहिए।

सामान्य दिन शुद्धि

शुभ तिथि

दोनों पक्षों की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, द्वादशी (2, 3, 5, 7, 10, 12) और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (1) तथा शुक्लपक्ष की त्रयोदशी (13) शुभ तिथियाँ हैं।
क्षय एवं वृद्धि तिथियां वर्ज्य हैं।

शुभ वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ हैं।

शुभ नक्षत्र

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तर–फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढ़ श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र शुभ हैं।

शुभ करण

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर एवं वणिज शुभ करण हैं।

लग्न–शुद्धि–

लोग कहते हैं कि चन्द्रमा का बल प्रधान है, किन्तु शास्त्रों के अनुसार लग्नबल ही प्रधान है। लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं। 3, 8 स्थानों में सूर्य या शनि शुभ होते हैं। द्वितीय अथवा तृतीय स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। 3, 6 स्थानों में मंगल शुभ होता है। 2, 3, 4, 5, 6, 9, 10 स्थानों में बुध व बृहस्पति शुभ होते हैं। 2, 3, 4, 5, 9, 10 स्थानों में शुक्र शुभ होता है। 3, 5, 6, 8, 9, 10, 12 स्थानों में राहु शुभ होता है।

चौघड़िया मुहूर्त

शीघ्रता में कोई भी यात्रा–मुहूर्त न बनता हो, या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर के लिए विशेषरूप से चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग है, लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यक शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया–मुहूर्त देखा जाता है।

अमृत, चर, लाभ और शुभ चौघड़िया श्रेष्ठ हैं। इस योग में कार्य करने से सफलता मिलती है। दिन और रात के चौघड़िया मुहूर्त निम्नलिखित है।

दिन में चौघड़िया मुहूर्त चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	घटी
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	03/45
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	07/30
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	11/15
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	15/00
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	18/45
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	22/30
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	26/15
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	30/00

रात्रि में चौघड़िया मुहूर्त चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	घटी
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	03/45
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	07/30
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	11/15
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	15/00
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	18/45
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	22/30
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	26/15
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	30/00

राहु काल

सूर्य उदय से सूर्य अस्त के मध्य प्रतिदिन लगभग 01 घण्टा 30 मिनट की अवधि राहु काल मानी गयी है। हमारे ऋषि–मुनियों ने राहुकाल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से मना किया है। राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ अशुभ सिद्ध होता है। जैसे सूर्य ग्रहण के दिन राहु सूर्य को ग्रस कर ग्रहण में बदल देता है वैसे ही राहुकाल में प्रारम्भ किये गये शुभ कार्य को ग्रहण लग जाता है, अर्थात् शुभता का परिणाम अशुभ होता है।

इन सभी बातों को सार्वजनिक तौर पर सिद्ध कर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि राहुकाल में किसी भी शुभ कार्य का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए, जो कार्य पहले से चल रहा है, वह चलता रहे उसमें कोई कमी नहीं आती। बस शुरुआत नहीं करनी चाहिए। हमारे दक्षिण भारत में लोग इस राहुकाल का विशेष ध्यान रखकर अपने शुभ कार्यों को प्रारम्भ करते हैं।

राहुकाल का समय और अवधि निकालने के लिये हम सबसे पहले सूर्योदय और सूर्यास्त निकालकर दिनमान निकाल लेते हैं और दिनमान को आठ बराबर भागों में बांट लेते हैं। एक हिस्सा लगभग 1 घण्टा 30 मिनट का होगा। अब रविवार से शनिवार तक (सातों दिन) क्रमशः 8वां, 2रा, 7वां, 5वां, 6ठा, 4था और 3रा भाग राहुकाल होगा।

इस प्रकार बहुत सरलता से प्रतिदिन का राहुकाल निकाल कर आप अपने शुभ कार्यों के प्रारम्भ को सुनिश्चित कर सकते हैं।

लगभग प्रतिदिन निम्नलिखित समय से प्रारम्भ होकर नियत समय पर राहु काल समाप्त होता है।

वार	आरम्भ काल घ. मि.	समाप्ति काल घ. मि.
रविवार	17.00	18.30
सोमवार	07.58	09.28
मंगलवार	15.30	17.00
बुधवार	12.29	13.59
गुरुवार	13.59	15.30
शुक्रवार	10.57	12.28
शनिवार	09.25	10.56

कार्य–सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

कार्य–सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं, जो दिन–रात के 24 घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य–सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य की होरा राज–सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र की होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध की होरा, सभी प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा की होरा, द्रव्य–संग्रह के लिए शनि की होरा, विवाह के लिए गुरु की होरा तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल की होरा उत्तम होती है। प्रत्येक होरा 1घण्टे की होती है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) 1 घण्टा तक उसी वार की होरा रहती है। उसके बाद 1 घण्टे की दूसरी होरा उस वार के छठे वार की होरा होती है। इसी प्रकार दूसरी होरा के वार से छठे वार की होरा तीसरे घण्टे तक रहती है। इस क्रम से 24घण्टे में 24 होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय–समय उसी (अगले) वार की होरा आ जाती है। किसी कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के 1घण्टे–मुहूर्त्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र की होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र की होरा किस–किस समय रहेगी। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें एवं अट्ठारहवें घण्टे में शुक्र की होरा मिली। अतएव प्रवास के लिए उपर्युक्त होरा शुभ है। प्रत्येक वार के 24 घण्टों की होरा निम्नलिखित है।

होरा चक्र

वार	हो. 1	हो. 2	हो. 3	हो. 4	हो. 5	हो. 6	हो. 7	हो. 8	हो. 9	हो. 10	हो. 11	हो. 12	हो. 13	हो. 14	हो. 15	हो. 16	हो. 17	हो. 18	हो. 19	हो. 20	हो. 21	हो. 22	हो. 23	हो. 24
रवि	र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चन्द्र.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंगल.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बुध.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गुरु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शुक्र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
शनि.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम

किसी भी वार की प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक–एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध की, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) की होरा होगी एवं रवि को छोड़कर शनि की होरा होगी। इसी क्रम से आगे शेष 21 होरा उस दिन व्यतीत होंगी।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा

राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद ग्रहण, राज–दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण–ताम्रादि कार्य, यज्ञ, मन्त्रोपदेश, गाय–बैल एवं वाहन का क्रय आदि कार्य करें।

चन्द्र (सोम) की होरा

कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग–बगीचा लगाना, वृक्षारोपण एवं चांदी की वस्तुओं का निर्माण कार्य करें।

मंगल की होरा

वाद—विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध—नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण—ताम्रादि कार्य, शल्य—क्रिया (आपरेशन) एवं व्यायाम कार्य करें।

बुध की होरा

साहित्यारम्भ, पठन—पाठन, शिक्षा—दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य—संग्रह, चातुर्य, बही—खाता, हिसाब—किताब, लोक—सम्पर्क एवं पत्र व्यवहार कार्य करें।

गुरु की होरा

धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह—शान्ति, यज्ञ—हवन, दान—पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव—प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय—विक्रय एवं तीर्थाटन कार्य करें।

शुक्र की होरा

नृत्य—संगीत, स्त्री—प्रसंग, प्रेम—व्यवहार, प्रियजन—समागम, उत्सव, वस्त्र अलंकार धारण, लक्ष्मी—पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि—कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य एवं फिल्म—निर्माण कार्य करें।

शनि की होरा

गृह—प्रवेश, नौकर—चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल—पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल कपट, अर्क—निष्कासन, विसर्जन, धन—संग्रह एवं पद—ग्रहण कार्य करें।

अध्याय–2
योग

योग विचार

योग शब्द युज् धातु से बना है, जिसका अर्थ मिलना या जोड़ना है।

तिथि , वार , नक्षत्रादि से उत्पन्न योगों का यहाँ पर उल्लेख किया जा रहा है।

सर्वार्थसिद्धियोग चक्र

निम्नलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से सर्वार्थसिद्धि योग बनता है।

दिन	नक्षत्र							नक्षत्रसंख्या
र.	हस्त	मूल	उ.फा .	उ.आ .	उ.भा.	पुष्य	अश्विनी	7
चं.	श्रवण	रोहिणी	मृगशिरा	पुष्य	अनुराधा			5
मं.	अश्विनी	उत्तराभा.	कृत्तिका	आश्लेषा				4
बु.	रोहिणी	अनुराधा	हस्त	कृत्तिका	मृगशिरा			5
बृ.	रेवती	अनुराधा	अश्विनी	पुनर्वसु	पुष्य			5
शु.	रेवती	अनुराधा	अश्विनी	पुनर्वसु	श्रवण			5
श.	श्रवण	रोहिणी	स्वाति					3

यह योग अपने नाम को चरितार्थ करता है। इस योग में होने वाला कार्य सफल होता है।

सिद्धि योग

वार एवं तिथि के मिलन से सिद्धि योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	3, 8, 13
सोमवार	1, 6, 11
मंगलवार	3, 8, 13
बुधवार	2, 7, 12
गुरुवार	5, 10, 15
शुक्रवार	1, 6, 11
शनिवार	4, 9, 14

इस योग में होने वाला कार्य सफल होता है।

वार नक्षत्र जनित अमृत सिद्धि योग

अधोलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से अमृत योग बनता है।

- रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- बुधवार को अनुराधा नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- शुक्रवार को रेवती नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।
- शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो, तो अमृत सिद्धियोग बनता है।

यह योग अपने नाम को चरितार्थ करते हुए सर्वांगीण सिद्धि कारक होता है।

तिथि वार जनित अमृत योग

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से अमृत योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	5, 10, 15
सोमवार	5, 10, 15
मंगलवार	2, 7, 12
बुधवार	1, 6, 11
गुरुवार	3, 8, 13
शुक्रवार	4, 9, 14
शनिवार	1, 6 ,11

इस योग में होने वाला कार्य सफल होता है।

रविपुष्य योग

- **रविवार** के दिन यदि पुष्य नक्षत्र हो तो रविपुष्य योग बनता है।
- यह योग विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धि दायक होता है। रवि पुष्य योग यन्त्र–तन्त्र एवं मंत्र में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी–बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होता है।

गुरुपुष्य योग

- **गुरुवार** के दिन यदि पुष्य नक्षत्र हो तो गुरुपुष्य योग बनता है।
- यह योग व्यापार आदि कार्यों में अधिक फलीभूत होता है।

राज्यप्रद योग

- **मंगलवार** के दिन रिक्ता (4, 9, 14) तिथि हो तो राज्यप्रद योग बनता है।
- **शनिवार** के दिन रिक्ता (4, 9, 14) तिथि हो तो राज्यप्रद योग बनता है।

यह योग नाम के अनुसार फल देता है।

रवियोग

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करें यदि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा का नक्षत्र 4, 6, 9, 10, 13, 20 संख्याओं में पड़े, तो उस दिन रवियोग होता है, जो सभी दोषों को दूर करता है।

उदाहरण– यदि किसी दिन कृत्तिका में सूर्य हो और आर्द्रा में चन्द्रमा है हो, तो उस दिन रवियोग अवश्य होगा।

रवियोग चक्र

सूर्य नक्षत्र से निम्नलिखित चन्द्र नक्षत्र हो, तो रवियोग बनता है।

क्र.सं.	सूर्य नक्षत्र	विहित चन्द्र नक्षत्र					
1.	**अश्विनी**	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा	मघा	हस्त	पू. आ.
2.	**भरणी**	मृगशिरा	पुनर्वसु	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.आ.
3.	**कृत्तिका**	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वाती	अभिजित
4.	**रोहिणी**	पुनर्वसु	आश्लेषा	उ.फा.	हस्त	विशाखा	श्रवण
5.	**मृगशिरा**	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनुराधा	धनिष्ठा
6.	**आर्द्रा**	आश्लेषा	पू.फा.	चित्रा	स्वाती	ज्येष्ठा	शतभिषा
7.	**पुनर्वसु**	मघा	उ.फा.	स्वाती	विशाखा	मूल	पूर्वभाद्र
8.	**पुष्य**	पू.फा.	हस्त	विशाखा	अनुराधा	पू.आ.	उत्तरभाद्र
9.	**आश्लेषा**	उ.फा.	चित्रा	अनुराधा	ज्येष्ठा	उ.आ.	रेवती
10.	**मघा**	हस्त	स्वाती	ज्येष्ठा	मूल	अभिजित	अश्विनी
11.	**पू.फा.**	चित्रा	विशाखा	मूल	पू.आ.	श्रवण	भरणी
12.	**उ.फा.**	स्वाती	अनुराधा	पू.आ.	उ.आ.	धनिष्ठा	कृत्तिका
13.	**हस्त**	विशाखा	ज्येष्ठा	उ.आ.	अभिजित	शतभिषा	रोहिणी
14.	**चित्रा**	अनुराधा	मूल	अभिजित	श्रवण	पूर्वभाद्र	मृगशिरा
15.	**स्वाती**	ज्येष्ठा	पू.आ.	श्रवण	धनिष्ठा	उत्तरभाद	आर्द्रा
16.	**विशाखा**	मूल	उ.आ.	धनिष्ठा	शतभिषा	रेवती	पुनर्वसु
17.	**अनुराधा**	पू.आ.	अभिजित	शतभिषा	पूर्वभाद्र	अश्विनी	पुष्य
18.	**ज्येष्ठा**	उ.आ.	श्रवण	पूर्वभाद्र	उत्तरभाद्र	भरणी	आश्लेषा
19.	**मूल**	अभिजित	धनिष्ठा	उत्तरभाद्र	रेवती	कृत्तिका	मघा.
20.	**पू.आ.**	श्रवण	शतभिषा	रेवती	अश्विनी	रोहिणी	पूर्व फा.
21.	**उ.आ.**	धनिष्ठा	पूर्वभाद्र	अश्विनी	भरणी	मृगशिरा	उ.फा.
22.	**अभिजित**	शतभिषा	उत्तरभाद्र	भरणी	कृत्तिका	आर्द्रा	हस्त
23.	**श्रवण**	पूर्वभाद्र	रेवती	कृत्तिका	रोहिणी	पुनर्वसु	चित्रा
24.	**धनिष्ठा**	उत्तरभाद्र	अश्विनी	रोहिणी	मृगशिरा	पुष्य	स्वाती
25.	**शतभिषा**	रेवती	भरणी	मृगशिरा	आर्द्रा	आश्लेषा	विशाखा
26.	**पूर्वभाद्र**	अश्विनी	कृत्तिका	आर्द्रा	पुनर्वसु	मघा	अनुराधा
27.	**उत्तरभाद्र**	भरणी	रोहिणी	पुनर्वसु	पुष्य	पू.फा.	ज्येष्ठा
28.	**रेवती**	कृत्तिका	मृगशिरा	पुष्य	आश्लेषा	उ.फा.	मूल

प्रशस्तयोग

निम्नलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से प्रशस्त योग बनता है।

वार	नक्षत्र
रविवार	रेवती
सोमवार	हस्त
मंगलवार	पुष्य
बुधवार	रोहिणी
गुरुवार	स्वाती
शुक्रवार	उत्तरफाल्गुनी
शनिवार	मूल

यह योग अपने नाम को चरितार्थ करते हुए सर्वांगीण सिद्धि कारक होता है।

अभिजित (विजय) मुहूर्त

प्रत्येक दिन 11.45 से 12.30 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहलाता है।

नारद पुराण के अनुसार दिन के 11.36 से 12.24 तक का समय अभिजित मुहूर्त कहा गया है।

अभिजित मुहूर्त में किए गए सभी कार्य सफल होते हैं। इसके लिए किसी भी शुद्धाशुद्धि का विचार आवश्यक नहीं है।

त्रिपुष्कर योग (तिथि + नक्षत्र + वार)

जिन नक्षत्रों के तीन चरण एक राशि में हों वे त्रिपुष्कर नक्षत्र हैं। कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ एवं पूर्वभाद्र त्रिपुष्कर नक्षत्र हैं।

नियम– द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियों शनिवार, मंगलवार, रविवार तथा कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, पूर्वभाद्र की स्थिति आती है, तो त्रिपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुणित फल देता है।

उदाहरण– मंगलवार के दिन द्वितीया तिथि और उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र हो, तो त्रिपुष्कर योग बन जाता है। इस योग में किसी की मृत्यु होती है, तो उसके सहित तीन व्यक्तियों की मृत्यु, यदि इस योग में किसी वस्तु की क्षति हो जाय, तो तीन वस्तुओं का विनाश और किसी का जन्म या किसी पदार्थ की प्राप्ति हो तो त्रिगुणित जन्म या पदार्थों का लाभ होता है।

त्रिपुष्कर योग चक्र

वार	तिथि	नक्षत्र
रविवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.
मंगलवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.
शनिवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	कृत्तिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.

द्विपुष्कर योग (तिथि + वार + नक्षत्र)

जिन नक्षत्रों कं दो चरण एक राशि में हों वे द्विपुष्कर नक्षत्र हैं। मृगशीर्ष, चित्रा एवं धनिष्ठा द्विपुष्कर नक्षत्र हैं।

नियम– द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी (2, 7, 12) तिथियों, शनिवार, मंगलवार, रविवार और मृगशीर्ष, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्र के मिलन (योग) से द्विपुष्कर योग बनता है।
द्विपुष्कर योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में द्विगुणित फल देता है।

उदाहरण– रविवार के दिन द्वादशी तिथि और चित्रा नक्षत्र हो, तो द्विपुष्कर योग बन जाता है। इस योग में किसी की मृत्यु होती है, तो उसके सहित दो व्यक्तियों की मृत्यु, यदि इस योग में किसी वस्तु की क्षति हो जाय, तो दो वस्तुओं का विनाश और इस द्विपुष्कर योग में किसी का जन्म या किसी पदार्थ की प्राप्ति हो, तो द्विगुणित जन्म या पदार्थों का लाभ होता है।

द्विपुष्कर योग चक्र

वार	तिथि	नक्षत्र
रविवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
मंगलवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
शनिवार	द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा

मृत्यु योग (वार + तिथि)

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से मृत्यु योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	1, 6, 11
सोमवार	2, 7, 12
मंगलवार	1, 6, 11
बुधवार	3, 8, 13
गुरुवार	4, 9, 14
शुक्रवार	2, 7, 12
शनिवार	5, 10, 15

मृत्यु योग में शुभ कार्य वर्जित हैं।

काल योग (वार + नक्षत्र)

निम्नलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से काल योग बनता है।

वार	नक्षत्र
रविवार	भरणी
सोमवार	आर्द्रा
मंगलवार	मघा
बुधवार	चित्रा
गुरुवार	ज्येष्ठा
शुक्रवार	अभिजित
शनिवार	पूर्वभाद्र

कालयोग में शुभ कार्य वर्जित हैं।

दग्ध योग (वार + तिथि)

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से दग्ध योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	12
सोमवार	11
मंगलवार	5
बुधवार	3
गुरुवार	6
शुक्रवार	8
शनिवार	9

इस योग में शुभ कार्य त्याज्य हैं, तथा यात्रा तो बिल्कुल ही नहीं करनी चाहिए।

विष योग (वार + तिथि)

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से विष योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	5
सोमवार	6
मंगलवार	7
बुधवार	8
गुरुवार	9
शुक्रवार	10
शनिवार	11

इस योग में शुभ कार्य त्याज्य हैं, परन्तु यात्रा तो अवश्य ही छोड़ देना चाहिए।

हुताशन योग (वार + तिथि)

निम्नलिखित वार एवं तिथि के मिलन से हुताशन योग बनता है।

वार	तिथि
रविवार	12
सोमवार	6
मंगलवार	7
बुधवार	8
गुरुवार	9
शुक्रवार	10
शनिवार	11

इस योग में शुभ कार्य त्याज्य हैं, परन्तु यात्रा तो अवश्य ही परित्याग करना चाहिए।

यमघण्ट योग (वार + नक्षत्र)

निम्नलिखित वार एवं नक्षत्र के मिलन से यमघण्ट योग बनता है।

वार	नक्षत्र
रविवार	मघा
सोमवार	विशाखा
मंगलवार	आर्द्रा
बुधवार	मूल
गुरुवार	कृत्तिका
शुक्रवार	रोहिणी
शनिवार	हस्त

इस योग में शुभ कार्य त्याज्य हैं, परन्तु यात्रा तो अवश्य ही परित्याग करना चाहिए।

कुछ प्रमुख योग निम्नलिखित हैं–

क्रमां	योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	अमृतसिद्धियोग विषयोग तिथि	हस्त 5	मृगशिरा 6	अश्विनी 7	अनुराधा 8	पुष्य 9	रेवती 10	रोहिणी 11
2	सर्वार्थसिद्धि योग दुष्ट तिथि	अश्विनी, पुष्य तीनों उ.ह.मू. 1,3,7 संवत्	रोहिणी, मृग. अनुराधा, श्रव. 2,11	अश्विनी, कृ. आश्ले.,उ.भा. 3,9,12	कृ.,रोहिणी,मृ. हस्त, अनुराधा 7,9,11	अश्विनी, पुन. पुष्य अनुराधा रेवती	अश्विनी, पुन. अनुराधा श्रवण रेवती	रोहिणी, स्वाती श्रवण 11,13
3	सिद्धियोगनक्षत्र	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती
	सिद्धियोगतिथि	0	0	3★,8✠13	7★,12	5,10★ 15 ✠,30	1,611✠	4 ✠14
5	रत्नांकुर योग	8✠,13	1	4✠14	5,10★,15✠	2,7★,12	5★,15✠	3★,8✠
6	मृत्यु योग	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त
7	मृत्युदा तिथि अधम योग	1–4विषाख्य 6–11	2,7,12	1,6,11	3,8,13	4,9,14	2,7,12	5,10,15,30
8	ककचयोग	12	11	10	9	8	7	6
9	दग्धयोग	12	11	5	1(संवर्त) 2(विशाख्य) 3–4(कुलिक)	6	8–9 (विषाख्य)	9–7 (विषाख्य)
10	उत्पात योग	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
11	कालयोग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
12	यमघण्ट	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
13	यमदंष्ट्रां	मघा,धनिष्ठा	मूल,विशाखा	भरणी,कृत्ति.	पुन.,पू.आ.	अश्वि.उ.आ.	रोहिणी,अनु.	श्रव.,शतभि.
14	मुसल वज्र	भर. वा दग्ध नक्ष.	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
15	राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.आ.
16	कामयोग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा

★ कृष्णपक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा, ✠ शुक्लपक्ष के तिथ्यर्ध में भद्रा रहेगी।

अध्याय–3

मुहूर्त्त

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त :

अयन

प्रायः सभी देवताओं की स्थापना उत्तरायण में कर्त्तव्य है। तथापि वाराह, चतुःषष्ठी योगिनी, मातृका, भैरव, वामन तथा नृसिंहादि उग्र देवताओं की स्थापना दक्षिणायण में भी करने की शास्त्रकारों ने अनुमति प्रदान की है और बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा के उदय होने पर देव प्रतिष्ठा का कार्य उत्तम होता है।

विहित मास

माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास में देवताओं की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ है। अत्यावश्यक होने पर पौष (मकरार्क) एवं चैत्र (मेषार्क) मास भी ग्राह्य हैं।

विहित तिथि

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा तिथियां सभी देवताओं की प्रतिष्ठा के लिए शुभ हैं।

विशेष

उपर्युक्त तिथि के अतिरिक्त चतुर्थी तिथि में गणेश एवं यमराज की प्रतिष्ठा शुभ है। नवमी तिथि में भद्रकाली की प्रतिष्ठा प्रशस्त है तथा चतुर्दशी तिथि में शिव की प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

विहित वार

रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार एवं शनिवार देवताओं की प्रतिष्ठा के लिए शुभ हैं।

विहित नक्षत्र

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्रों में देव प्रतिष्ठा शुभ है और देवी–देवताओं की अपने नक्षत्रों में स्थापना विशेष रूप से प्रशस्त है।

लग्न शुद्धि

शुद्धवाले दिन (पंचांग तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण) पूर्वाह्न और शुभ मुहूर्त्त में जब लग्न पर शुभ ग्रह, या शुभ योग की दृष्टि हो, जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो, अष्टम स्थान शुद्ध हो, केन्द्र (1, 4, 7, 10) एवं त्रिकोण (5, 9) में तथा 11वें स्थान में शुभ ग्रह हों और चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, शनि तीसरे,

छठे, ग्यारहवें हों, तो ऐसी शुभ बेला में प्रतिष्ठा करने से उस प्रतिमा में देवताओं का वास हो जाता है। इससे प्रतिष्ठा करने वाले को पुत्र, धन, सुख, सम्पत्ति और आरोग्यता की प्राप्ति होती है।

विशेष—देवशयन, मलमास, गुरु—शुक्र के अस्तादि दोष, विष्टिपात व चन्द्र—तारा निर्बलत्व सर्वथा त्याज्य हैं।

प्रतिष्ठा समय विचार

पूर्वाह्न में प्रतिष्ठा उत्तम, मध्याह्न में मध्यम और सायं काल में अधम होती है। अशुभ चन्द्रमा अपने घर का भी निषिद्ध है। सत्य युग में रात्रि में भी देवप्रतिष्ठा होती थी, किन्तु कलियुग में रात्रि प्रतिष्ठा वर्जित है।

गृहारम्भ मुहूर्त

विहित मास

वैशाख, श्रावण, माघ, पौष, आश्विन, फाल्गुन, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास गृहारम्भ के लिए प्रशस्त हैं।

मतान्तर से

मेष, वृष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर और कुम्भ राशियों के सूर्य में, क्रमशः चैत्र, ज्येष्ठा, आषाढ़, भाद्र, आश्विन, कार्तिक, पौष और माघ मासों में गृह निर्माण शुभ होता है।

विहित तिथि

द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा (2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15) तिथियां गृहारम्भ के लिए प्रशस्त हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार एवं शनिवार गृहारम्भ के लिए प्रशस्त हैं।

विहित नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, पुष्य, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्रों में गृह का आरम्भ शुभ होता है।

विहित लग्न

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ एवं मीन (2, 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12) लग्न गृहारम्भ के लिए प्रशस्त हैं।

गृहारम्भ में वृषवास्तु विचार

गृहारम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के सात नक्षत्र अशुभ, आगे के ग्यारह नक्षत्र शुभ और इससे आगे के दस नक्षत्र अशुभ माने गये हैं। इस गणना में अभिजित् भी सम्मिलित है।

वृषवास्तुचक्र

सूर्य नक्षत्रों के आगे लिखे चन्द्र नक्षत्र 'वृषवास्तुचक्र' द्वारा शुद्ध है। वृषवास्तुचक्र से शुद्ध नक्षत्रों में ही खात (नींव की खुदाई) और शिलान्यास किया जाता है।

क्र.सं.	सूर्यनक्षत्र	वृषवास्तु चक्र से शुद्ध एवं प्रशस्त चन्द्र नक्षत्र					
1	**अश्विनी**	पुष्य	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.
2	**भरणी**	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	
3	**कृत्तिका**	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	
4	**रोहिणी**	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	उ.षा.
5.	**मृगशिरा**	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	उ.षा.
6	**आर्द्रा**	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.	उ.षा.	
7	**पुनर्वसु**	चित्रा	स्वाती	अनु.	उ.षा.	धनिष्ठा	
8	**पुष्य**	स्वाती	अनु.	उ.षा.	धनिष्ठा	शत.	
9.	**आश्लेषा**	अनु.	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.		
10	**मघा**	अनु.	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	
11	**पू.फा.**	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	
12	**उ.फा.**	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	
13	**हस्त**	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	
14	**चित्रा**	उ.आ.	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	
15	**स्वाती**	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	
16	**विशाखा**	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	मृग.
17	**अनुराधा**	धनिष्ठा	शत.	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	मृग.
18	**ज्येष्ठा**	शत.	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	मृग.	
19	**मूल**	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	मृग.	पुष्य	
20	**पू.आ.**	उ.भा.	रेवती	रोहिणी	मृग.	पुष्य	
21	**उ.आ.**	रेवती	रोहिणी	मृग.	पुष्य		
22	**अभिजित**	रोहिणी	मृग.	पुष्य			
23	**श्रवण**	रोहिणी	मृग.	पुष्य	उ.फा.		
24	**धनिष्ठा**	रोहिणी	मृग.	पुष्य	उ.फा.	हस्त	
25	**शतभिषा**	रोहिणी	मृग.	पुष्य	उ.फा.	हस्त	चित्रा
26	**पूर्वभाद्र**	मृग.	पुष्य	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती
27	**उत्तरभाद्र**	पुष्य	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	
28	**रेवती**	पुष्य	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु.

भूशयन चक्र

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र 5, 7, 9, 12, 19 और 26 वां हो तो भूशयन माना जाता है। उदाहरणस्वरूप यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में हो तो मृ., पुन., आश्ले., उ.फा.,मू., एवं उ.भा. नक्षत्रों में भूशयन होगा। भूशयन वाले नक्षत्रों में खात (नींव आदि की खुदाई) और शिलान्यास नहीं किया जाता है।

क्र.	सूर्य नक्षत्र	भूशयन वाले चन्द्र नक्षत्र					
1	**अश्विनी**	मृगशिरा	पुनर्वसु	आश्लेषा	उ॰फा॰	मूल	उ॰भा॰
2	**भरणी**	आर्द्रा	पुष्य	मघा	हस्त	पूर्वाषाढ़	रेवती
3	**कृत्तिका**	पुनर्वसु	आश्लेषा	पू॰फा॰	चित्रा	उत्तराषाढ़	अश्विनी
4	**रोहिणी**	पुष्य	मघा	उ॰फा॰	स्वाती	श्रवण	भरणी
5	**मृगशिरा**	आश्लेषा	पू॰फा॰	हस्त	विशाखा	धनिष्ठा	कृत्तिका
6	**आर्द्रा**	मघा	उ॰फा॰	चित्रा	अनुराधा	शतभिषा	रोहिणी
7	**पुनर्वसु**	पू॰फा॰	हस्त	स्वाती	ज्येष्ठा	पूर्वभाद्र	मृगशिरा
8	**पुष्य**	उ॰फा॰	चित्रा	विशाखा	मूल	उत्तरभाद्र	आर्द्रा
9	**आश्लेषा**	हस्त	स्वाती	अनुराधा	पूर्वाषाढ़	रेवती	पुनर्वसु
10	**मघा**	चित्रा	विशाखा	ज्येष्ठा	उत्तराषाढ़	अश्विनी	पुष्य
11	**पू॰फा॰**	स्वाती	अनुराधा	मूल	श्रवण	भरणी	आश्लेषा
12	**उ॰फा॰**	विशाखा	ज्येष्ठा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	कृत्तिका	मघा
13	**हस्त**	अनुराधा	मूल	उत्तराषाढ़	शतभिषा	रोहिणी	पू॰फा॰
14	**चित्रा**	ज्येष्ठा	पूर्वाषाढ़	श्रवण	पूर्वभाद्र	मृगशिरा	उ॰फा॰
15	**स्वाती**	मूल	उत्तराषाढ़	धनिष्ठा	उत्तरभाद्र	आर्द्रा	हस्त
16	**विशाखा**	पूर्वाषाढ़	श्रवण	शतभिषा	रेवती	पुनर्वसु	चित्रा
17	**अनुराधा**	उत्तराषाढ़	धनिष्ठा	पूर्वभाद्र	अश्विनी	पुष्य	स्वाती
18	**ज्येष्ठा**	श्रवण	शतभिषा	उत्तरभाद्र	भरणी	आश्लेषा	विशाखा
19	**मूल**	धनिष्ठा	पूर्वभाद्र	रेवती	कृत्तिका	मघा	अनुराधा
20	**पूर्वाषाढ़**	शतभिषा	उत्तरभाद्र	अश्विनी	रोहिणी	पू॰फा॰	ज्येष्ठा
21	**उत्तराषाढ़**	पूर्वभाद्र	रेवती	भरणी	मृगशिरा	उ॰फा॰	मूल
22	**श्रवण**	उत्तरभाद्र	अश्विनी	कृत्तिका	आर्द्रा	हस्त	पूर्वाषाढ़
23	**धनिष्ठा**	रेवती	भरणी	रोहिणी	पुनर्वसु	चित्रा	उत्तराषाढ़
24.	**शतभिषा**	अश्विनी	कृत्तिका	मृगशिरा	पुष्य	स्वाती	श्रवण
25	**पूर्वभाद्र**	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा	विशाखा	धनिष्ठा
26	**उत्तरभाद्र**	कृत्तिका	मृगशिरा	पुनर्वसु	मूल	अनुराधा	शतभिषा
27	**रेवती**	रोहिणी	आर्द्रा	पुष्य	पू॰फा॰	ज्येष्ठा	पूर्वभाद्र

राहु मुख विचार

नींव खोदने के लिए दिशा विचार–

गृह बनाना हो तो सिंह, कन्या और तुला के सूर्य में राहु का मुख ईशान कोण में, वृश्चिक, धनु और मकर के सूर्य में, राहु का मुख वायव्य कोण में, कुम्भ, मीन और मेष राशि के सूर्य में राहु का मुख नैर्ऋत्य कोण में एवं वृष, मिथुन और कर्क राशि के सूर्य में राहु का मुख आग्नेय कोण में रहता है।

नींव खोदते समय मुख भाग को छोड़कर **पृष्ठ भाग से खोदना शुभ** होता है।

राहुचक्र

सूर्य की स्थिति	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चिक, धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क
राहु मुख भाग	**ईशान** (पू॰–उ॰)	**वायव्य** (उ.–प.)	**नैर्ऋत्य** (द.–प.)	**आग्नेय** (पू.–द.)
राहु पृष्ठ भाग	**आग्नेय** (पूर्व और दक्षिण का मध्य)	**ईशान** (पूर्व और उत्तर का मध्य)	**वायव्य** (उत्तर और पश्चिम का मध्य)	**नैर्ऋत्य** (दक्षिण और पश्चिम का मध्य)

गृह प्रवेश मुहूर्त

विहित मास

माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ मास में गृह प्रवेश करना उत्तम है।

कार्तिक, श्रावण और मार्गशीर्ष में गृहप्रवेश मध्यम है।

आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष और चैत्र मास में गृह प्रवेश करने से हानि तथा शत्रुभय होता है।

विहित तिथि

द्वितीया(2), तृतीया(3), पंचमी(5), षष्ठी(6), सप्तमी(7), दशमी(10), एकादशी(11), द्वादशी(12), त्रयोदशी(13) एवं पूर्णिमा(15) तिथियां गृह प्रवेश के लिए प्रशस्त हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार को गृहप्रवेश प्रशस्त है।

शनिवार को गृह प्रवेश मध्यम है।

विहित नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, उत्तराषाढ़, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र गृहप्रवेश के लिए प्रशस्त हैं।

लग्न

द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश (2/5/8/11) लग्न उत्तम हैं तथा तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश (3/6/9/12) लग्न मध्यम हैं।

लग्नशुद्धि

ग्रह लग्न से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम, दशम एवं एकादश (1/2/3/5/7/9/10/11) स्थानों में शुभ होते हैं। तृतीय, षष्ठ एवं एकादश (3/6/11) स्थानों में पापग्रह शुभ होते हैं। चतुर्थ एवं अष्टम (4/8) स्थानों में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

गृह प्रवेश समय वाम रवि विचार

जिस लग्न में गृहप्रवेश करना हो, उस लग्न से रवि का विचार किया जाता है।

- लग्न कुण्डली में लग्न से 8 से लेकर 12वें भाव तक यदि सूर्य हो, तो पूर्व द्वार के घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है, जो शुभ है।
- लग्न कुण्डली में लग्न से 5 से लेकर 9वें भाव तक यदि सूर्य हो, तो दक्षिण द्वार के घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है, जो शुभ है।
- लग्न कुण्डली में लग्न से 2 से लेकर 6ठे भाव तक यदि सूर्य हो, तो पश्चिम द्वार के घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है, जो शुभ है।
- लग्न कुण्डली में लग्न से 11 से लेकर 3रे भाव तक यदि सूर्य हो, तो उत्तर द्वार के घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है, जो शुभ है।

वामार्कचक्र

पूर्वमुख	दक्षिण मुख	पश्चिम मुख	उत्तर मुख
सूर्य–8	सूर्य–5	सूर्य–2	सूर्य–11
सूर्य–9	सूर्य–6	सूर्य–3	सूर्य–12
सूर्य–10	सूर्य–7	सूर्य–4	सूर्य–1
सूर्य–11	सूर्य–8	सूर्य–5	सूर्य–2
सूर्य–12	सूर्य–9	सूर्य–6	सूर्य–3

उदाहरण– 30 जुलाई, 2001 को श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि सोमवार, अनुराधा नक्षत्र और सिंह लग्न गृह प्रवेश के लिए शुभ है। यहाँ पर लग्न कुण्डली के अनुसार वाम रवि विचार किया जा रहा है।

लग्न कुण्डली

30/07/2001

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सिंह लग्न से रवि 12वाँ है। पूर्व द्वार एवं उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम और शुभ है।

पश्चिमाभिमुख घर में प्रवेश के लिए रवि वाम नहीं है, क्योंकि सिहं लग्न से रवि 12वाँ है। अतः पश्चिमाभिमुख घर में प्रवेश के लिए शुभ नहीं है।

प्रकारान्तर से

- पूर्वद्वार के गृह में पूर्णा तिथियों (5/10/15) में गृह प्रवेश शुभ होता है।
- दक्षिण द्वार के गृह में नन्दा तिथियों (1/6/11) में गृह प्रवेश शुभ होता है।
- पश्चिम द्वार के गृह में भद्रा तिथियों (2/7/12) में गृह प्रवेश शुभ होता है।
- उत्तर द्वार के गृह में जया तिथियों (3/8/13) में गृह प्रवेश शुभ होता है।

गृह प्रवेश मुहूर्त्त में कलश चक्र विचार

एक कलशाकार चक्र द्वारा गृह प्रवेश के शुभ नक्षत्र की खोज की जा रही है।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक की एक संख्या को कलश के मुख में समझकर उस दिन गृह प्रवेश करने से घर में अग्निदाह हो जाता है। इसी प्रकार सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र संख्या 2 से 5 तक कलश के पूर्व में है। इनमें गृहप्रवेश करने से घर सदा खाली रहता है। घर एवं जनवास शून्य हो जाता है। सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र संख्या 6 से 9 तक संख्यक नक्षत्र कलश की दक्षिण तरफ होती है, इनमें गृहप्रवेश करने से गृहस्वामी के घर में सदा द्रव्य लाभ होता रहता है। पुनः सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र संख्या 10 से 13 तक कलश के पश्चिम की नक्षत्रों का गृह प्रवेश गृह स्वामी की श्री प्राप्ति के होते हैं। पुनः सूर्य नक्षत्र. से चन्द्र नक्षत्रों 14 से 17 तक की स्थिति में कलश के उत्तर का गृह प्रवेश सदा घर में निरर्थक कलह पैदा करता है तथा सूर्य नक्षत्र से 18 से 21 तक के चन्द्रनक्षत्रों में (जो कलश के गर्भ हैं) गृह प्रवेश करने से गर्भ नाश अर्थात् भविष्य की गर्भस्थ शिशुओं का विनाश होता है। सूर्य नक्षत्र से 22 से 24 संख्यक कलश के गुहय के चन्द्र नक्षत्रों में गृह प्रवेश करने से दीर्घ समय तक गृहपति उस घर में निवास करता है। सूर्य नक्षत्र से अन्तिम के 25 से 27 संख्यक कलश के कण्ठगत हैं, उन चन्द्र नक्षत्रों का गृह प्रवेश घर के स्वामी के लिए सदा स्थिरता का होता है।

उदाहरण : दिनांक 19/05/2001 को ज्येष्ठ मास के कृष्णपक्ष की एकादशी तिथि एवं रेवती नक्षत्र है, जो गृहप्रवेश के लिए शुभ है। अब यहाँ पर कलश चक्रानुसार दिन का नक्षत्र शोधन किय जा रहा है। सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में है और दिन का नक्षत्र रेवती है। कृत्तिका नक्षत्र से रेवती नक्षत्र 25 वाँ है, जो कलश चक्रानुसार शुभ है, अतः गृहप्रवेश के लिए कलश चक्रानुसार रेवती नक्षत्र शुभ है।
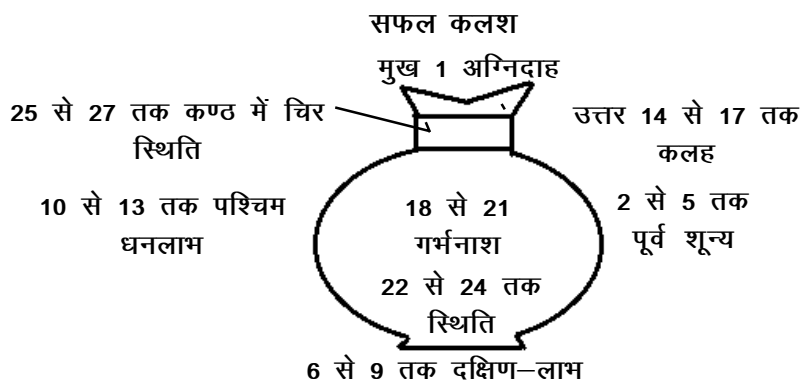
दिनांक 23/05/2001 को सूर्य नक्षत्र कृत्तिका है और दिन का भी नक्षत्र कृत्तिका है। कलश चक्रानुसार सूर्य नक्षत्र प्रथम नक्षत्र गृहप्रवेश के लिए शुभ नहीं है।

कुम्भ नक्षत्र फल

स्थान	नक्षत्र संख्या	फल
मुख	1	अग्नि भय
पूर्व	4	शून्य (वधभय)
दक्षिण	4	धनलाभ
पश्चिम	4	लक्ष्मी प्राप्ति
उत्तर	4	कलह
गर्भ	4	गर्भ हानि
गुदा	3	स्थिरता
कण्ठ	3	स्थिरता

सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र की गणना करें। 1 से 5 नेष्ट, 6 से 13 श्रेष्ठ, 14 से 21 नेष्ट, 22 से 27 श्रेष्ठ होते हैं।

शुभ मुहूर्त्त में गृह प्रवेश करें तथा सम्भव हो तो उसी मुहूर्त्त में संकल्प, पूजन आदि करें।

कलश चक्र के अनुसार सूर्य नक्षत्र से दिन के शुभ नक्षत्र निम्नलिखित हैं।

क्र.	सूर्यनक्षत्र	दिन के शुभ नक्षत्र													
1	**अश्विनी**	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती
2	**भरणी**	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰
3	**कृत्तिका**	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी
4	**रोहिणी**	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰
5.	**मृगशिरा**	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰
6	**आर्द्रा**	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰
7	**पुनर्वसु**	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा
8	**पुष्य**	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰
9.	**आश्लेषा**	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य
10	**मघा**	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰
11	**पू.फा.**	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा
12	**उ.फा॰**	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰
13	**हस्त**	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰
14	**चित्रा**	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त
15	**स्वाती**	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा
16	**विशाखा**	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती
17	**अनुराधा**	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	पू॰फा॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰
18	**ज्येष्ठा**	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	उ॰फा॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰
19	**मूल**	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा
20	**पू.आ.**	पू॰भा॰	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	चित्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल
21	**उ.आ**	उ॰भा॰	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	स्वाती	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰**आ॰**
22	**श्रवण**	रेवती	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	विशा॰	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰
23	**धनिष्ठा**	अश्वि॰	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	अनु॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰
24	**शतभिषा**	भरणी	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	ज्येष्ठा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰
25	**पूर्वभाद्र**	कृत्ति॰	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	मूल	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰
26	**उ.भाद्र**	रोहि॰	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	पू॰आ॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰
27	**रेवती**	मृग॰	आर्द्रा	पुन॰	पुष्य	आश्ले॰	मघा	पू॰फा॰	उ॰फा॰	उ॰आ॰	श्रव॰	धनि॰	शत॰	पू॰भा॰	उ॰भा॰

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त के लिए दिशा शूल, नक्षत्र शूल, योगिनी भद्रा, चन्द्रमा, तारा, शुभ नक्षत्र इत्यादि का विचार किया जाता है।

शुभ तिथि

भद्रादि दोष रहित 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा (1) यात्रा के लिए शुभ है।

उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा एवं रेवती नक्षत्र यात्रा के लिए उत्तम होता है।

सर्वदिग्गमन नक्षत्र

अश्विनी, पुष्य, अनुराधा और हस्त नक्षत्र विशेष रूप से सर्वदिग्गमन के लिए शुभ होता है।

मध्यम नक्षत्र

रोहिणी, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र ,ज्येष्ठा,मूल एवं शतभिषा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ होता है।

श्रेष्ठ चौघड़िया

अमृत, चर, लाभ और शुभ चौघड़िया यात्रा के लिए प्रशस्त हैं।

शुभ होरा

चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की होरा यात्रा के लिए प्रशस्त है।

शुभ चन्द्र

जन्म राशि से गिनने पर 1, 3, 6, 7, 10, 11वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्लपक्ष में 2, 5, 9वीं राशि का चन्द्र भी शुभ होता है।

शुभ तारा

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या आये उसे 9 से भाग दें, शेष 1, 2, 4, 6, 8, 0 बचे तो शुभ, शेष अशुभ है।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न

कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कभी न करें। शुभ लग्न वह है जिसमें 1, 4, 5, 7, 10 वें स्थानों में शुभ ग्रह और 3, 6, 10, 11 वें स्थानों में पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जिसमें चन्द्रमा 1, 6, 8, 12 वें या किसी भी पाप ग्रह से युत हो। शनि 10वें, शुक्र 7वें, गुरु 8वें, अस्तमिति बुध 12वें, लग्नेश 6, 7, 8, 12वें हो।

दिक्शूल

- सोमवार एवं शनिवार को पूर्वदिशा में दिक्शूल होता है।
- सोमवार एवं गुरुवार को अग्निकोण में दिक्शूल होता है।
- गुरुवार को दक्षिण दिशा में दिक्शूल होता है।
- रविवार एवं शुक्रवार को नैर्ऋत्य एवं पश्चिम दिशा में दिक्शूल होता है।
- मंगलवार को वायव्य एवं उत्तर दिशा में दिक्शूल होता है।
- बुधवार एवं शुक्रवार को ईशान कोण में दिक्शूल होता है।

अतः जिस वार को यात्रा की दिशा में दिक्शूल हो उसे त्याग दें।

राहु–काल का वास

- शनिवार को पूर्व में राहु काल का वास रहता है।
- शुक्रवार को अग्निकोण में राहु काल का वास रहता है।
- गुरुवार को दक्षिण में राहु काल का वास रहता है।
- बुधवार को नैर्ऋत्य में राहु काल का वास रहता है।
- मंगलवार को पश्चिम में राहु काल का वास रहता है।
- सोमवार को वायव्य में राहु काल का वास रहता है।
- रविवार को उत्तर दिशा में राहुकाल का वास रहता है।

सम्मुख (यात्रा की दिशा में) काल–राहु नेष्ट है। अतः जिस वार को यात्रा की दिशा में कालराहु का वास हो, उसे त्याग दें।

नक्षत्र शूल

पूर्व दिशा के लिए ज्येष्ठा, पू.आ. एवं उ.आ. नक्षत्र में नक्षत्र शूल होता है।

दक्षिण दिशा के लिए विशाखा, श्रवण एवं पू.भा. नक्षत्र में नक्षत्र शूल होता है।

पश्चिम दिशा के लिए रोहिणी, पुष्य एवं मूल नक्षत्र में नक्षत्र शूल होता है।

उत्तर दिशा के लिए पू.फा., उ.फा., हस्त एवं विशाखा नक्षत्र में नक्षत्र शूल होता है।

यात्रा–दिशा के शूल नक्षत्रों में कभी यात्रा न करें। दक्षिण दिशा की यात्रा में पंचक (धनिष्ठा, शतभिषा, पू.भा., उ.भा. एवं रेवती नक्षत्र) वर्जित हैं।

योगिनी वास की तिथियाँ

1, 9 को पूर्व, 3, 11 को अग्निकोण, 5, 13 को दक्षिण, 4, 12 को नैर्ऋत्य, 6, 14 को पश्चिम, 7, 15 को वायव्य, 2, 10 को उत्तर, 8, 30 को ईशान में योगिनी का वास रहता है, यात्रा में सम्मुख तथा दाहिने की (दिशा) योगिनी अशुभ है। बायें और पीछे की योगिनी शुभ होती है।

चन्द्र दिशा

यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख या दाहिने (दिशा में) शुभ होता है। पीछे होने से मृत्यु और बायीं ओर होने से हानि होती है। चन्द्रमा की दिशा उसकी तत्कालीन राशि से जानी जाती है।

- मेष, सिंह और धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व में रहता है।
- वृष, कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिण में रहता है।
- मिथुन, तुला और कुम्भ राशि का चन्द्रमा पश्चिम में रहता है।
- कर्क, वृश्चिक और मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर में रहता है।

सेवाकरण मुहूर्त्त

विहित तिथि

प्रतिपदा (कृष्ण पक्ष की), द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी एवं त्रयोदशी (शुक्ल पक्ष) तिथियां नौकरी प्रारम्भ करने के लिए शुभ हैं।

विहित वार

रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार नौकरी प्रारम्भ करने के लिए शुभ हैं।

विहित नक्षत्र

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़, अभिजित, श्रवण, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र नौकरी प्रारम्भ करने के लिए शुभ हैं।

लग्न

अधोलिखित लग्न शुद्धि की उपलब्धि में प्रत्येक राशि ग्राह्य हैः– लग्न में चन्द्र, शुक्र या शुक्र चतुर्थ में, षष्ठ में शनि, तृतीय, दशम, ग्यारहवें (3, 10, 11) में सूर्य–मंगल तथा सप्तम भाव में गुरु हो।

दुकान प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त

विहित तिथियाँ

प्रतिपदा (कृ.), द्वितीया तृतीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा (1(कृ.), 2, 3, 5, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15) तिथियाँ दुकान प्रारम्भ करने के लिए प्रशस्त हैं।

विहित वार

रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार को दुकान प्रारम्भ करना शुभ हैं।

विहित नक्षत्र

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़, श्रवण, अभिजित, धनिष्ठा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र दुकान प्रारम्भ करने के लिए प्रशस्त हैं।

लग्न

कुम्भ राशि के बिना लग्न राशियाँ श्रेष्ठ हैं। परन्तु चन्द्र–बुध लग्न में, 8,12 वां स्थान शुद्ध तथा 2,10,11 वें में शुभ ग्रह हों तो शुभ है।

वाहन खरीदने का मुहूर्त्त

विहित तिथियाँ

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा (1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15) तिथियाँ वाहन खरीदने के लिए प्रशस्त हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार वाहन खरीदने के लिए प्रशस्त हैं।

विहित नक्षत्र

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती नक्षत्र वाहन खरीदने के लिए शुभ हैं।

लग्न– शुद्ध आवश्यक है।

लग्न से 8/12 में कोई ग्रह न हो।

सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। 1 से 9 तक नेष्ट, 10 से 15 श्रेष्ठ, 16 से 24 नेष्ट, 25 से 27 श्रेष्ठ होते हैं।

नामकरण मुहूर्त्त

विहित तिथियाँ

प्रतिपदा (कृष्णपक्ष की), द्वितीया, तृतीया, सप्तमी, दशमी, एकादशी एवं त्रयोदशी (शुक्ल पक्ष की) तिथियाँ नामकरण के लिए शुभ हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार नामकरण के लिए शुभ हैं।

विहित नक्षत्र

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र नामकरण के लिए प्रशस्त हैं।

लग्न

2, 4, 6, 7, 9, 12 लग्न जब लग्न से अष्टम और द्वादश भाव शुद्ध हो, 2, 3, 5, 9वें चन्द्रमा, 3, 6, 11वें पाप ग्रह और अन्यत्र शुभ ग्रह हो तो लग्न शुभ होता है।

विशेष

यह संस्कार बालक के कल्याण की भावना से किया जाता है।

कुयोग, विष्टि, श्राद्धदिन, ग्रहण तथा बालक के निर्बल चन्द्र से भिन्न दिन के पूर्वार्द्ध में जन्म नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिये।

अधोलिखित नक्षत्र के आगे वाले नक्षत्र वाहन खरीदने के लिए शुभ हैंः—

क्र.	सूर्य नक्षत्र	विहित दिन के नक्षत्र
1.	अश्विनी	मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, पूर्वभाद्र,उत्तरभाद्र, रेवती
2.	भरणी	पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी
3.	कृत्तिका	उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, भरणी
4.	रोहिणी	हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका
5.	मृगशिरा	चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, भरणी, कृत्तिका,रोहिणी
6.	आर्द्रा	स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा
7.	पुनर्वसु	विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा
8.	पुष्य	अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु
9.	आश्लेषा	ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य
10.	मघा	मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुर्नवसु,, पुष्य, आश्लेषा
11.	पूर्वफाल्गुनी	पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, पुष्य, आश्लेषा, मघा
12.	उत्तरफाल्गुनी	उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी
13.	हस्त	श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी
14.	चित्रा	धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त
15.	स्वाती	शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी, भरणी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा
16.	विशाखा	पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, हस्त,चित्रा, स्वाती
17.	अनुराधा	उत्तरभाद्र, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, चित्रा, स्वाती, विशाखा
18.	ज्येष्ठा	रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती,विशाखा, अनुराधा
19.	मूल	अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा
20.	पूर्वाषाढ़	भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल
21.	उत्तराषाढ़	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़
22.	श्रवण	रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़
23.	धनिष्ठा	मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण
24.	शतभिषा	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तराषाढ़,श्रवण, धनिष्ठा
25.	पूर्वभाद्र	पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा
26.	उत्तरभाद्र	पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र
27.	रेवती	आश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र

विवाह मुहूर्त

विहित मास

सूर्य संक्रमण की मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर , कुम्भ राशियों के चान्द्र मासों में विवाह उत्तमोत्तम होता है। श्रावण, भाद्रपद एवं आश्विन मास विवाह के लिए उत्तम हैं।

विहित तिथियाँ

- द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी एवं त्रयोदशी तिथियाँ विवाह के लिए उत्तमोत्तम हैं।
- प्रतिपदा (कृष्ण), षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी एवं पूर्णिमा तिथियाँ विवाह के लिए उत्तम हैं।

विहित वार

सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार विवाह के लिए उत्तमोत्तम हैं।

रविवार विवाह के लिए उत्तम है।

विहित नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़, उत्तरभाद्र एवं रेवती नक्षत्र विवाह के लिए उत्तमोत्तम हैं। अश्विनी, चित्रा, श्रवण एवं धनिष्ठा नक्षत्र विवाह के लिए उत्तम हैं।

विहित योग

प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभमान, सुकर्मा, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सिद्धि, वरीयान्, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल एवं ब्रह्म योग विवाह के लिए प्रशस्त हैं।

विहित करण

- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज विवाह के लिए प्रशस्त हैं।
- शकुनि, चतुष्पद, नाग एवं किंस्तुघ्न करण विवाह के लिए सामान्य हैं।
- विष्टि करण विवाह के लिए सर्वथा त्याज्य है।

गुरु/शुक्र अस्त विचार

गुरु और शुक्र ग्रह यदि अस्त चल रहे हों, तो उसे तारा दूबा कहते हैं। इसलिए गुरु–शुक्र का अस्त काल विवाह मुहूर्त के लिए त्याज्य है। गुरु + 11^0 पर तथा शुक्र + 9^0 पर अस्त होता है।

देव शयन विचार

जब सूर्य उत्तरायण (सूर्य कर्क से धनु राशि) होता है, उस काल को देवताओं का दिन माना जाता है। सूर्य दक्षिणायण काल (सूर्य मकर से मिथुन राशि) देवताओं की राशि मानी जाती है। यही काल देवताओं का शयन काल कहलाता है। देव शयन काल में भी विवाह मुहूर्त्त त्याज्य होता है।

विवाह के शुभ लग्न

विवाह में लग्न शोधन की प्राथमिकता दी गई है। अतएव दूसरे विचारों के साथ ही साथ लग्न शुद्धि का विशेष रूप से विचार करना चाहिये।

- मिथुन, कन्या व तुला लग्न सर्वोत्तम हैं।
- वृष व धनु लग्न उत्तम हैं।
- कर्क और मीन लग्न मध्यम हैं।

विवाह में दस दोष त्याज्य हैं :

1. लत्ता, 2. पात, 3. युति, 4. वेध, 5 यामित्र 6. बाण 7. एकर्गल, 8. उपग्रह, 9. क्रान्तिसाम्य और 10. दग्धा तिथि– ये 10 दोष विवाह में त्याज्य हैं।

उपर्युक्त दोषों का विवेचन निम्नलिखित है।

1. लत्ता–

- सूर्य जिस नक्षत्र में हो, उससे आगे के 12 वें नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो धन नाशक है।
- चन्द्र जिस नक्षत्र में हो, उससे पीछे के 22 वें नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो भयदायक है।
- मंगल जिस नक्षत्र में हो, उससे आगे के 03 नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो मृत्यु कारक है।
- बुध जिस नक्षत्र मे हो, उससे पीछे के 7 वें नक्षत्र पर लत्ता दोष कारक होता है, जो बन्धु नाशक है।
- बृहस्पति जिस नक्षत्र में हो, उससे आगे 6ठे नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो भयदायक है।
- शुक्र जिस नक्षत्र में हो, उससे पीछे 5 वें नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो कार्यनाशक है।
- शनि जिस नक्षत्र में हो, उससे आगे 8वें नक्षत्र पर लत्तादोष कारक होता है, जो कुलनाशक है।
- राहु जिस नक्षत्र में हो, उससे आगे 9 वें नक्षत्र पर लतादोष कारक होता है, जो मृत्युकारक है।

उदाहरण– मंगल भरणी में हो, और विवाह नक्षत्र कृत्तिका हो, तो यह मंगल का लतादोष युक्त समझना चाहिए।

2. **पात**–साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है, वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

प्रकारान्तरेण– सूर्य नक्षत्र से आश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण और रेवती आदि अन्यतम नक्षत्र तक की जितनी संख्या पड़े, वही संख्या यदि अश्विनी से विवाहर्क्ष तक पड़े तो पात दोष होता है।

पात दोष चक्र

चंद्र नक्षत्र→	**रो.**	**मृ.**	**मघा**	**उ.फा.**	**हस्त**	**स्वा.**	**अनु.**	**मूल**	**उ.षा.**	**उ.भा.**	**रे.**
	आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृति.	अनु.	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.
	पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये.	पुन.	शत.	ज्ये.
	शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि.	उ.आ.	धनि	शत.	विशा.	धनि
सूर्य नक्षत्र→	पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा.	पू.भा.	पुन.	पू.भा	आ.	विशा.	उ.फा.	मघा.
	चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा.	स्वा.	हस्त	पू.आ.	भर.	अनु.	पू.फा.	पू.फा.
	मूल	हस्त	रेव.	पू.भा.	भर.	रेव.	पू.फा.	उ.भा.	उ.आ.	भर.	स्वा.

उदाहरण : रेवती में विवाह हो तो अश्विनी, मघा, पू.फा.स्वाती, धनिष्ठादि किसी नक्षत्र पर सूर्य–संक्रमण नहीं होना चाहिए।

3. **युति**– जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो, तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है। विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो, तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता, इसे शुभ कहा गया है।

4. **वेध**– पंच शलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े, तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया गया है। इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो, तो वेध होता है यह विवाह में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.आ.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
अभि.	उ.आ.	श्र.	रे.	उ.भा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उ.आ.	ग्रह का वेध नक्षत्र

5. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो, तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक 6 राशि (अंश कलादि) तक हो, तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.आ.	उ.भा.	रे.	वि.नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.	ग्रह नक्षत्र

6. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश 1, 10, 19 और 28 हों, तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है, जो विवाह के लिए अशुभ है।

7. एकार्गल — विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो, तो एकार्गल दोष होता है।

8. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा 5, 7, 8, 10, 14, 15, 18, 19, 21, 22, 23, 24 और 25 वें नक्षत्र में हो, तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और बाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

9. क्रान्तिसाम्य— जब मेष–सिंह, वृष–मकर, मिथुन–धनु, कर्क–वृश्चिक, कन्या–मीन तथा तुला–कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

10. दग्धा तिथि— जब सूर्य, धनु–मीन, वृष– कुम्भ, मेष–कर्क, मिथुन–कन्या, सिंह–वृश्चिक, तुला–मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो, तो क्रम से 2, 4, 6, 8, 10, 12 तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृष कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
6	4	8	10	12	2	तिथि

लत्तादि दोष परिहार– लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भटिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू–कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग) में त्याज्य है। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो, तो एकार्गल उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह में कन्या के लिए गुरु बल विचार

बृहस्पति कन्या की राशि से नवम, पंचम, एकादश, द्वितीय और सप्तम राशि में हो, तो उत्तमोत्तम है।

बृहस्पति कन्या की राशि से दशम, तृतीय, षष्ठ और प्रथम राशि में हो, तो दान देने से शुभ होता है।

नेष्ट गुरु– जब गुरु जन्मराशि से 4/8/12 वें हो, तो अशुभ होता है।

परिहार– जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु–मीन) या उच्च में हो, तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।

विवाह में वर के लिए सूर्य बल विचार

सूर्य वर की राशि से तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश राशि में हो, तो उत्तमोत्तम होता है।

सूर्य वर की राशि से प्रथम, द्वितीय पंचम, सप्तम एवं नवम राशि में हो, तो दान देने से शुभ होता है।

नेष्ट रवि– यदि सूर्य जन्म राशि से 4/8/12 वें में हो, तो अशुभ होता है।

विवाह में चन्द्र बल विचार

वर और कन्या की राशि से तीसरा, छठा, सातवाँ, दशवाँ एवं ग्यारहवाँ चन्द्रमा उत्तमोत्तम होता है। वर और कन्या की राशि से पहला, दूसरा, पांचवाँ, नौवाँ एवं बारहवाँ चन्द्रमा हो, तो दान देने से शुभ होता है।

नेष्ट चन्द्र– जन्म राशि से 4/8 वाँ चन्द्र नेष्ट है।

लग्न शुद्धि

विवाह नक्षत्रों के शुद्धकाल में ही विवाह हो सकता है। विवाह के लिए इसी शुद्ध काल में विवाह लग्न देखा जाता है। इसके लिए विवाहकालिक कुंडली बनाई जाती है और उसके भिन्न–भिन्न भावों में स्थित ग्रहों के आधार पर लग्न शुद्धि का विचार किया जाता है। जो लग्न शुद्ध (निर्दोष) हो, उसी लग्न में विवाह संस्कार किया जाता है। विवाह के समय लग्न की शुद्धि ज्ञात करने के लिए लग्नकालिक ग्रहों की भिन्न–भिन्न भावों में स्थिति की निर्दोषता या सदोषता का विचार इस प्रकार किया जाता है :–

1. विवाह लग्न में चंद्र और पाप ग्रह वर्जित हैं।
2. द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।
3. तृतीय भाव में शुक्र की स्थिति सामान्य दोषकारक मानी गई है। अगर वह इस भाव में स्थित हो, तो उसका दोष पूजा एवं दान से समाप्त हो जाता है।

   जिस विवाह लग्न में किसी सामान्य दोष वाले ग्रह की दान–पूजा की जाती है, उस विवाह लग्न को पूजा वाला लग्न कहा जाता है।
4. चौथे भाव में राहु की स्थिति भी सामान्य दोष कारक है। इस दोष की निवृत्ति भी राहु की दान–पूजा से समाप्त हो जाती है।
5. पंचम भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।
6. छठे भाव में चंद्रमा, शुक्र और लग्नेश वर्जित हैं। चंद्रमा यदि नीच राशि या नीचांश में हो, तो इसका यहां दोष नहीं माना जाता। इसी प्रकार नीचस्थ और शत्रु राशिस्थ शुक्र का भी यहां दोष समाप्त हो जाता है। ध्यान रहे, यदि चंद्रमा एवं शुक्र लग्नेश हों, तो छठे भाव में इनकी स्थिति के दोष का कोई परिहार नहीं है।
7. सप्तम भाव में गुरु और चंद्र को छोड़कर शेष सभी ग्रह वर्जित हैं। यहां चंद्र और गुरु की स्थिति का दोष सामान्य माना गया है, जो कि इनकी दान–पूजा से शून्य हो जाता है।
8. अष्टम भाव में चंद्र, मंगल, लग्नेश और सभी शुभ ग्रह वर्जित हैं। नीचस्थ या नीचांशस्थ चंद्रमा, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ शुक्र और नीचस्थ, शत्रुराशिस्थ या अस्तंगत भौम का इस भाव में स्थिति दोष समाप्त हो जाता है। यदि ये लग्नेश हों, तो इनका दोष किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं होता।
9. नवम भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।
10. दशम भाव में मंगल का दोष सामान्य माना जाता है, जो कि उसकी दान–पूजा से समाप्त हो जाता है।
11. ग्यारहवें भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है।
12. बारहवें भाव में शनि का दोष सामान्य है, जो कि उसकी दान–पूजा से दूर हो जाता है।
13. विवाह लग्न से द्वितीय भाव में कोई क्रूर वक्री ग्रह और द्वादश भाव में कोई क्रूर मार्गी ग्रह हो, तो उसे क्रूर कर्त्तरी दोष कहा जाता है। क्रूर कर्त्तरी होने पर विवाह लग्न दूषित हो जाता है।

यदि सप्तमरहित केंद्र एवं त्रिकोण में बुध, गुरु, शुक्र में से कोई एक भी ग्रह पड़ा हो, तो क्रूर कर्त्तरी दोष समाप्त हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले क्रूर ग्रह यदि शत्रुराशिस्थ, नीचस्थ या अस्त हों, तो भी कर्त्तरी दोष नहीं रहता। द्वितीय या द्वादश भाव में गुरु बैठा हो, तब भी कर्त्तरी दोष समाप्त हो जाता है।

14. यदि विवाह लग्न के समय चंद्र से द्वितीय भाव में कोई क्रूर ग्रह और द्वादश भाव में क्रूर ग्रह मार्गी होकर बैठा हो, तब भी क्रूर कर्त्तरी दोष माना जाता है। इस कर्त्तरी दोष का परिहार भी चंद्र राशि को विवाह लग्न मानकर पूर्ववत् जानना चाहिए।

गोधूलि लग्न

सूर्यास्त के समय (सूर्यास्त से लगभग आधा घड़ी पहले और आधा घड़ी बाद तक के समय) को गोधूलिकाल कहा जाता है। लेकिन गुरुवार को सूर्यास्त के बाद की और शनिवार को सूर्यास्त से पहले की ही आधी घड़ी को गोधूलिकाल माना गया है। यदि किसी कारणवश उपरोक्त प्रकार से बनाया गया विवाहलग्न अनुकूल न बैठे या लग्नशुद्धि में प्रदर्शित उपरोक्त प्रक्रिया से शुद्ध लग्न न मिल पाए, तो इस गोधूलि के लग्न में भी विवाह किया जा सकता है। गोधूलि लग्न में सूर्यास्त के समय का लग्न लिया जाता है। सूर्यास्तकालिक लग्न (यानी गोधूलि लग्न) का शोधन करते समय केवल यह ध्यान रखना पड़ता है कि गोधूलि लग्न (सूर्यास्तकालिक लग्न) में तथा गोधूलिलग्न से छठे और अष्टम भाव में चंद्रमा न हो। कुछ आचार्य गोधूलि में लग्न, सप्तम या अष्टम में मंगल को भी वर्ज्य बतलाते हैं। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता। यह जरूरी है कि गोधूलि लग्न के समय विवाह नक्षत्र विद्यमान हो और पहले निर्दिष्ट सभी दोषों से यह मुक्त भी हो।

इस प्रकार विवाह के समय लग्नशुद्धि देखकर शुद्धलग्न में विवाह किया जाता है। यदि लग्न कुण्डली में कोई ऐसा ग्रह पड़ा हो, जो वर्जित है और उसका कोई परिहार नहीं है, तब वह लग्न विवाह के लिए ग्राह्य नहीं होता।

बलवान् विवाह लग्न

विवाह लग्न यदि बलवान् हो, तो मिलान में अष्टकूटों के गुण कुछ कम होने, या वर–कन्या की कुण्डलियों के मिलान में कुछ कमी रह जाने की स्थिति में भी दाम्पत्य जीवन सुखमय हो सकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि विवाहकालिक लग्न के समय ग्रह आदि की उन स्थितियों को, जो विवाह लग्न को बलवान् बनाती हैं, स्वीकार किया जाए। विवाहलग्न को बलवान् बनाने वाली विवाह लग्नकालिक ग्रह स्थितियां ये हैं–

1. गुरु, शुक्र, बुध में से अधिकाधिक ग्रह सप्तमहीन केंद्र या त्रिकोण में हों।
2. सूर्य ग्यारहवें भाव में हो।
3. चंद्र ग्यारहवें भाव, वर्गोत्तम या अपने नवांश में हो।
4. लग्नेश या लग्न नवांशेश ग्यारहवें या सप्तमहीन केंद्र में सबल स्थिति में हो।
5. लग्न वर्गोत्तमगत हो।

बलवान् विवाहलग्न चाहने वालों को गोधूलि एवं पूजा वाले लग्न की उपेक्षा करनी चाहिए और उन्हें त्रिबल शुद्धि (गोचर में सूर्य, चंद्र, गुरु बल) द्वारा सर्वथा शुद्धकाल में विवाह करना भी जरूरी है।

त्रिबल शुद्धि

लग्न की दृष्टि से विवाह के लिए सर्वथा निर्दोष मुहूर्त्त प्रति वर्ष पंचांगों में दिए रहते हैं, जिन्हें उस वर्ष के शुद्ध विवाह मुहूर्त्त कहा जाता है। ये शुद्ध मुहूर्त बतलाते हैं कि यदि इस वर्ष किसी का विवाह हो सकता है, तो वह इन्हीं मुहूर्त्तों में निर्धारित समय के अंतर्गत ही होना संभव है। लेकिन "कौन से शुद्ध विवाह मुहूर्त्त में किस लड़के/लड़की का विवाह किया जाए"– यह निर्णय तो वर/कन्या की जन्म राशियों और विवाह मुहूर्त्तकालिक सूर्य, चंद्र, गुरु की शुभ गोचर स्थिति पर ही निर्भर करता है। इन तीनों के गोचरबल को ही यहां त्रिबल की संज्ञा दी गई है।

ध्यान दें – कन्या की जन्मराशि से गोचर चंद्र एवं गुरु का बल और वर की जन्मराशि से गोचर सूर्य एवं चंद्र का बल देखा जाता है। इन बलों के अभाव में विवाह संस्कार संपन्न नहीं किया जा सकता।

गोचर बल देखने का प्रकार यह है–

1. यदि वर की राशि से विवाह मुहूर्त्तकालीन गोचर सूर्य 3, 6, 10, 11 वें हो, तो वह (गोचर सूर्य) शुभ, 1, 2, 5, 7, 9 वें हो, तो पूज्य (थोड़ा अशुभ) एवं यदि 4, 8, 12 वें हो, तो अशुभ होता है।

   इसी प्रकार यदि वर राशि से विवाह मुहूर्त्तकालिक गोचर चंद्र 1, 3, 6, 7, 10, 11वें हो, तो वह (गोचर चंद्र) शुभ, 2, 5, 9, 12 वें हो, तो पूज्य (थोड़ा अशुभ) और 4, 8 वें हो, तो अशुभ होता है।

2. कन्या की राशि से ठीक इसी तरह गोचर चंद्र की उपरोक्त (वर के लिए बतलाई गई) स्थितियों के अनुसार ही वह (गोचर चंद्र) कन्या के लिए शुभ, पूज्य और अशुभ होता है।

   इसी भांति कन्या की राशि से विवाह मुहूर्त्तकालीन गोचर गुरु यदि 2, 5, 7, 9, 11वें हो, तो वह (गोचर गुरु) शुभ, 1, 3, 6, 10 वें हो, तो पूज्य तथा 4, 8, 12 वें हो, तो अशुभ होता है।

वर/कन्या के गोचर सूर्य, चंद्र और गुरु की शुभाशुभ आदि स्थिति का यह सामान्य निर्णय है। इसका विशेष निर्णय नीचे दिया जा रहा है –

वर/कन्या के लिए शुभ गोचर सूर्य, चंद्र, गुरु यदि स्वराशि, स्वोच्च, स्वमित्र, वर्गोत्तम नवांश में स्थित एवं शुभग्रह से दृष्ट हों, तो वे परम शुभ, यदि नीचस्थ, शत्रुस्थ, अस्त एवं क्रूर/शत्रुग्रह से दृष्ट हों, तो सामान्य माने जाएंगे। इसी तरह सामान्य निर्णयानुसार वर/कन्या के ये पूज्य ग्रह उच्च, मित्रराशि आदि में या मित्र, शुभ ग्रह से दृष्ट हों, तो वे सामान्य एवं नीच/शत्रु राशि आदि में, या शत्रु/क्रूर से दृष्ट हों, तो अशुभ माने जाएंगे।

ठीक, इसी प्रकार वर/कन्या के लिए सामान्य निर्णयानुसार अशुभ ये तीनों ग्रह यदि स्वोच्चादि में स्थित या शुभ किंवा मित्र ग्रहों से दृष्ट हों, तो सामान्य एवं नीचादि गत हों, अथवा शत्रु/पापग्रहों की नजर में हों, तो परम अशुभ माने जाएंगे।

इस प्रकार विशेष निर्णय द्वारा वर/कन्या के लिए यदि गोचर सू., चं. या गुरु शुभ/परम शुभ हैं, तो समझें कि उस ग्रह का वर/कन्या को पूर्णबल प्राप्त है। यदि वह (सू., चं., गु. में से कोई भी) सामान्य है, तो जानना चाहिए कि उस ग्रह का वर/कन्या को सामान्य (मध्यम) बल प्राप्त है। यदि वह गोचर ग्रह अशुभ या परम अशुभ है, तो उसे (वर/कन्या को) उस गोचर ग्रह का शून्यबल मिलेगा।

यदि गोचर ग्रह पूर्ण बली हो, तो विवाह परम शुभ होगा। गोचर में सामान्य बली ग्रह की पूजा–अर्चना के बाद ही वर/कन्या का विवाह करना चाहिए। लेकिन, यदि सूर्य, चंद्र या गुरु में से किसी एक का भी बल शून्य है, तो उस समय विवाहार्थ शास्त्र अनुमति नहीं देते। हां, अत्यावश्यकता होने पर ऐसी स्थिति में शून्यबल वाले गोचर ग्रह की त्रिगुण पूजा–अर्चना करके ही विवाह किया जा सकता है।

इस प्रकार कन्या का चंद्र और गुरुबल एवं वर का चंद्र और सूर्यबल प्राप्त होने पर निर्धारित शुद्ध लग्न में विवाह किया जाता है।

शुभ मुहूर्त	**अशुभ मुहूर्त**
1. देव उठावनी एकादशी	1. होलाष्टक
2. पूलेरा दूज	2. अधिक मास
3. वसंत पंचमी	3. पितृ पक्ष
4. अक्षय तृतीया	4. देवशयन
5. भड़ली नवमी	5. सूर्य–धनु/मीन
6. देवशयन एकादशी	6. गुरु/शुक्र अस्त

शुद्ध विवाह मुहूर्त

शुद्ध विवाह मुहूर्त देखने के लिए पंचांग में तालिका होती है, जिसका प्रारूप मात्र नीचे दर्शाया जा रहा है, पंचांग से शुद्ध विवाह मुहूर्त देखा जा सकता है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त

मास	तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख 2004ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष–रेखाएं	शुद्ध लग्न, ग्रह–दान–पूजा आदि विवरण
						चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
कार्ति.शु.	15	शु.	मार्ग.12	नवं. 26	रोहि.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।।ऽ सू ऽ अ ।ऽ।।	ल. 6 (25/43 बाद) (25/43 तक मृत्युबाण)
मार्ग.कृ.	1	श.	मार्ग.13	नवं. 27	रोहि.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।।ऽ सू ऽ अ ।ऽ।।	ल. 5 (24/56 तक) (श. शु. दा.)
मार्ग.कृ.	1	श.	मार्ग.13	नवं. 27	मृग.	वृष	वृश्चि.	कन्या	।।। ।। ।।।।	ल. 6 (26/08 बाद),
मार्ग.कृ.	2	र.	मार्ग.14	नवं. 28	मृग.	मिथुन	वृश्चि.	कन्या	।।। ।ऽ नृ ।।।।	ल. गोधू., 5 (श. शु. दा.), 6(27/40 तक),

भिन्न–भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह निर्णय के लिए त्रिबल–शुद्धि तालिका

नाम/जन्म राशि	लड़का	सौर मास जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	अप्रै. 22, 23, 29 मई 1, 2, 9, 10, 11, 12 जून 22, 23, 26, 27 जुला. 3, 4, 5, 8, 9, 10, 13 अग. 18, 20, 21, 28, 29 सितं. 1 अक्तू. 21, 22, 25, 26, 30, 31 नवं 1, 6, 7, 9 जन. 16, 21, 29, 30, 31	ज्येष्ठ, कार्तिक	अप्रै. 22, 23, 29 मई 1, 2, 9, 10, 11, 12 जून 22, 23, 26, 27 जुला. 3, 4, 5, 8, 9, 10, 13 अग. 18, 20, 21, 28, 29 सितं. 1 अक्तू. 21, 22, 25, 26, 30, 31 नवं 1, 6, 7, 9, 17, 18, 21, 22, 23, 26,27,28 दिसं. 4, 5, 6, 8, 9 जन. 16, 21, 29, 30, 31	

अध्याय–4

मुहूर्त्त प्रयोग

पंचांग द्वारा मुहूर्त्त देखने की विधि

यहाँ पर आर्यभट्ट पंचांग के आधार पर विवरण प्रस्तुत किया जाएगा।

- सभी पंचांगों में मुहूर्त्त के वारे में यथा स्थान निर्दिष्ट रहता है। उसको देख कर मुहूर्त्त निकाला जाता है। फिर भी उसको समझने के लिए कुछ सूत्र नीचे दिये जा रहे हैं।
- सर्वप्रथम जिस काम के लिए मुहूर्त्त निकालना है। उस मुहूर्त्त के वारे में पंचांग में देखिए और वहाँ जो सूत्र दिया हुआ है उसको ठीक से समझिए।
- उसके वाद जिस दिन का मुहूर्त्त निकालना हो उस दिन के पंचांग को देखिए और वह अनुकूल है या नहीं इस पर विचार कीजिए।
- अनुकूल दिन में किया गया कार्य सफल होता है, अन्यथा नहीं।

गृह प्रवेश मुहूर्त्त देखने की विधि

सूरज नामक जातक ने आकर मुझ से कहा कि मुझे गृहप्रवेश करना है। उसके लिए एक अच्छा मुहूर्त्त 01 से 31 जुलाई 2001 के मध्य में निकाल दीजिए।

गृहप्रवेश मुहूर्त्त में निम्नलिखित विषय पर विचार किया जाता है–

1. मास 2. तिथि 3. वार 4. नक्षत्र 5. लग्न शुद्धि 6. वामरवि विचार एवं 7. कलश चक्र विचार।

मैंने सबसे पहले जुलाई 2001 का पंचांग निकाला और मुहूर्त्त खोजने लगा।

- 01 जुलाई 2001 को आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि, रविवार एवं विशाखा नक्षत्र है। आषाढ़ मास गृहप्रवेश के लिए शुभ नहीं है।
- 06 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि, शुक्रवार एवं पूर्वाषाढ़ नक्षत्र है। श्रावण मास गृहप्रवेश के लिए शुभ है, परन्तु प्रतिपदा तिथि शुभ नहीं है।

- 08 जुलाई 2001 को श्रावणमास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि, रविवार एवं श्रवण नक्षत्र है। गृहप्रवेश के लिए श्रावण मास एवं तृतीया तिथि शुभ है, परन्तु रविवार शुभ नहीं है।
- 16 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि, सोमवार एवं भरणी नक्षत्र है। गृहप्रवेश के लिए श्रावण मास, दशमी तिथि एवं सोमवार शुभ है, परन्तु भरणी नक्षत्र शुभ नहीं है।
- 25 जुलाई 2001 को श्रावण मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि, बुधवार एवं उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र है। सूर्य पुष्य नक्षत्र में है। कलश चक्रानुसार सूर्य नक्षत्र से दिन का नक्षत्र 5वाँ है, जो गृहप्रवेश के लिए शुभ नहीं है।
- 30 जुलाई 2001 को श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि, सोमवार ,अनुराधा नक्षत्र और गुरु, शुक्र, शुद्ध एवं उदित हैं। सूर्य पुष्य नक्षत्र में है। सिंह लग्न में गृहप्रवेश करना शुभ है। कलश चक्रानुसार सूर्य नक्षत्र से दिन का नक्षत्र 10वाँ है, जो नियमानुसार गृहप्रवेश के लिए शुभ है।

लग्न कुण्डली के अनुसार वामरवि विचार किया जा रहा है।

30. जुलाई, 2001 की लग्न कुण्डली

उपर्युक्त लग्न कुण्डली में सिंह लग्न से रवि 12वाँ है, जो पूर्व एवं उत्तर द्वार वाले घर में प्रवेश के लिए शुभ है।

प्रकारान्तर से दक्षिण द्वार के गृह में प्रवेश के लिए एकादशी तिथि शुभ होती है।

निष्कर्षतः पूर्व, उत्तर एवं दक्षिण द्वार वाले घर में प्रवेश शुभ है।

उपर्युक्त विवेचन के अनुसार सूरज नामक जातक के लिए गृह प्रवेश मुहूर्त्त निम्नलिखित है।

30 जुलाई 2001 को प्रातः 7.03 से 9.21 के भीतर गृहप्रवेश शुभ एवं प्रशस्त है।

सेवाकरण मुहूर्त्त देखने की विधि

पंकज नामक जातक ने मुझसे कहा कि मुझे नौकरी प्रारम्भ करने के लिए एक अच्छा मुहूर्त्त 7 जुलाई 2001 से 15 जुलाई 2001 के भीतर निकाल दीजिए।

सेवाकरण मुहूर्त्त में निम्नलिखित विषय पर विचार किया जाता है।

1. तिथि 2. वार 3. नक्षत्र और 4. लग्न शुद्धि।

मैंने सबसे पहले जुलाई 2001 का पंचांग निकाला और मुहूर्त्त खोजने लगा।

- 07 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि, शनिवार एवं उत्तराषाढ़ नक्षत्र है। नौकरी प्रारम्भ करने के लिए द्वितीया तिथि शुभ है, परन्तु शनिवार शुभ नहीं है।
- 09 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि, सोमवार एवं धनिष्ठा नक्षत्र है। नौकरी शुरू करने के लिए चतुर्थी तिथि शुभ नहीं है।
- 13 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि, शुक्रवार एवं रेवती नक्षत्र है, जो नौकरी शुरू करने के लिए शुभ है।

अब लग्न शुद्धि देखा जा रहा है।

13 जुलाई 2001 की लग्न कुण्डली
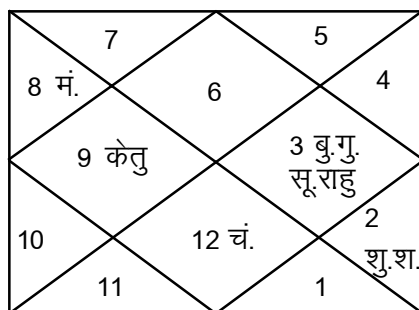
उपर्युक्त कन्या लग्न नौकरी प्रारम्भ करने के लिए शुभ एवं शुद्ध है। कन्या लग्न का समय 10.20 से 12.26 तक है।

उपर्युक्त विवेचन के परान्त पंकज के लिए नौकरी प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त निम्नलिखित है।

13 जुलाई 2001 को दिन में 10.20 से 12.26 के भीतर नौकरी प्रारम्भ करने के लिए शुभ समय है। इस समय नौकरी शुरू करना शुभ होगा।

वाहन खरीदने का मुहूर्त देखने की विधि

विश्वनाथ नामक जातक ने आकर मुझसे कहा कि मुझे वाहन खरीदना है उसके लिए एक अच्छा मुहूर्त्त अक्तूबर के महीने में निकाल दीजिए।

वाहन खरीदने के मुहूर्त्त में निम्नलिखित विषय पर विचार किया जाता है।

1. तिथि 2. वार 3. नक्षत्र 4. लग्न शुद्धि और 5 सूर्य नक्षत्र से दिन का नक्षत्र पर विचार।

मैंने सबसे पहले अक्तूबर का पंचांग निकाला और देखने लगा–

1 अक्तूबर 2001 को तिथि चतुर्दशी है, जो वाहन खरीदने के लिए शुभ नहीं है।

2 अक्टूबर 2001 को मंगलवार है, जो वाहन खरीदने के लिए वर्जित है।

तत्पश्चात् 3 अक्तूबर से 16 अक्तूवर 2001 तक मास अशुद्ध रहने के कारण वाहन खरीदना शुभ नहीं है।

17 अक्तूबर 2001 को आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तिथि, बुधवार एवं चित्रा नक्षत्र है, जो वाहन खरीदने के लिए शुभ है। सूर्य चित्रा नक्षत्र में है और दिन का नक्षत्र भी चित्रा है। अतः यह दिन भी वाहन खरीदने के लिए शुभ नहीं हुआ, क्योंकि सूर्य नक्षत्र से दिन का नक्षत्र प्रथम है, जो निषेध माना गया है।

19 अक्तूबर 2001 को आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि, शुक्रवार एवं विशाखा नक्षत्र है। वाहन खरीदने में विशाखा नक्षत्र शुभ नहीं है। अतः यह दिन भी वाहन खरीदने के लिए शुभ नहीं है।

31 अक्तूबर 2001 को आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि, बुधवार एवं अश्विनी नक्षत्र है, जो वाहन खरीदने के लिए शुभ है। सूर्य स्वाती नक्षत्र में है और दिन का नक्षत्र अश्विनी है। स्वाती नक्षत्र से दिन का नक्षत्र गिनने पर 14 वाँ है, जो वाहन खरीदने के लिए शुभ है। अब लग्न शुद्धि का विचार किया जा रहा है।

31 अक्तूबर 2001 को लग्न कुण्डली के अनुसार मकर लग्न शुद्ध है और वह लग्न दिन के 12.11 से प्रारम्भ होकर 01. 54 मिनट तक है, जो वाहन खरीदने के लिए शुभ है।

उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त विश्वनाथ के लिए वाहन खरीदने का मुहूर्त्त निम्नलिखित है।

31 अक्तूबर 2001 को 12.11 से 01.54 के भीतर वाहन खरीदने के लिए शुभ मुहूर्त्त है। इस समय वाहन खरीदना शुभ होगा।

यात्रा मुहूर्त देखने की विधि

विनय नामक जातक ने मुझसे कहा कि मुझे दिल्ली से इलाहाबाद 15 जुलाई, से 31 जुलाई 2001 के भीतर जाना है। इसके लिए एक अच्छा सा मुहूर्त निकलवा दीजिए। दिल्ली से इलाहाबाद पूरब दिशा में है। यात्रा में निम्नलिखित विषय पर विचार किया जाता है।

1. तिथि 2. नक्षत्र 3. चन्द्र/तारा 4. चौघड़िया 5. शुभ होरा 6. लग्न 7. दिक्शूल 8. राहुकाल वास 9. नक्षत्र शूल एवं 10. योगिनी वास।

- 15 जुलाई, 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि, रविवार एवं अश्विनी के उपरान्त भरणी नक्षत्र है। यात्रा के लिए नवमी तिथि शुभ नहीं है।
- 16 जुलाई, 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि सोमवार एवं भरणी नक्षत्र है। यात्रा के लिए दशमी तिथि शुभ है, परन्तु पूर्व दिशा की यात्रा के लिए सोमवार दिक्शूल होता है, जो शुभ नहीं है।
- 17 जुलाई 2001 को श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि, मंगलवार एवं कृत्तिका नक्षत्र है। यात्रा के लिए कृत्तिका नक्षत्र शुभ नहीं है।
- 26 जुलाई 2001 को श्रावण मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी तिथि, गुरुवार एवं हस्त नक्षत्र है, जो यात्रा के लिए शुभ है। गुरुवार को पूर्वदिशा में दिक्शूल नहीं होता है। राहुकाल का वास गुरुवार को दक्षिण में है, जो शुभ है। पूर्व दिशा के लिए उपर्युक्त नक्षत्र नक्षत्रशूल नहीं है। सप्तमी तिथि के अनुसार योगिनी का वास वायव्य कोण में है, जो पूर्वदिशा के लिए शुभ है। गुरु की होरा 12.40 से 1.40 तक है, जो यात्रा के लिए शुभ है एवं उस समय दिन का चौघड़िया लाभ है, वह भी शुभ है। विनय की राशि वृष है और दिन की राशि कन्या है, जो वृष राशि से पंचम है एवं शुक्ल पक्ष का है। यह भी यात्रा के लिए शुभ है।

उपर्युक्त विवेचन के अनुसार विनय के लिए दिल्ली से इलाहाबाद जाने के लिए निम्नलिखित समय हुआ– 26 जुलाई 2001 को दिन में 12.40 से 1.40 के भीतर यात्रा शुभप्रद है।

□ □ □